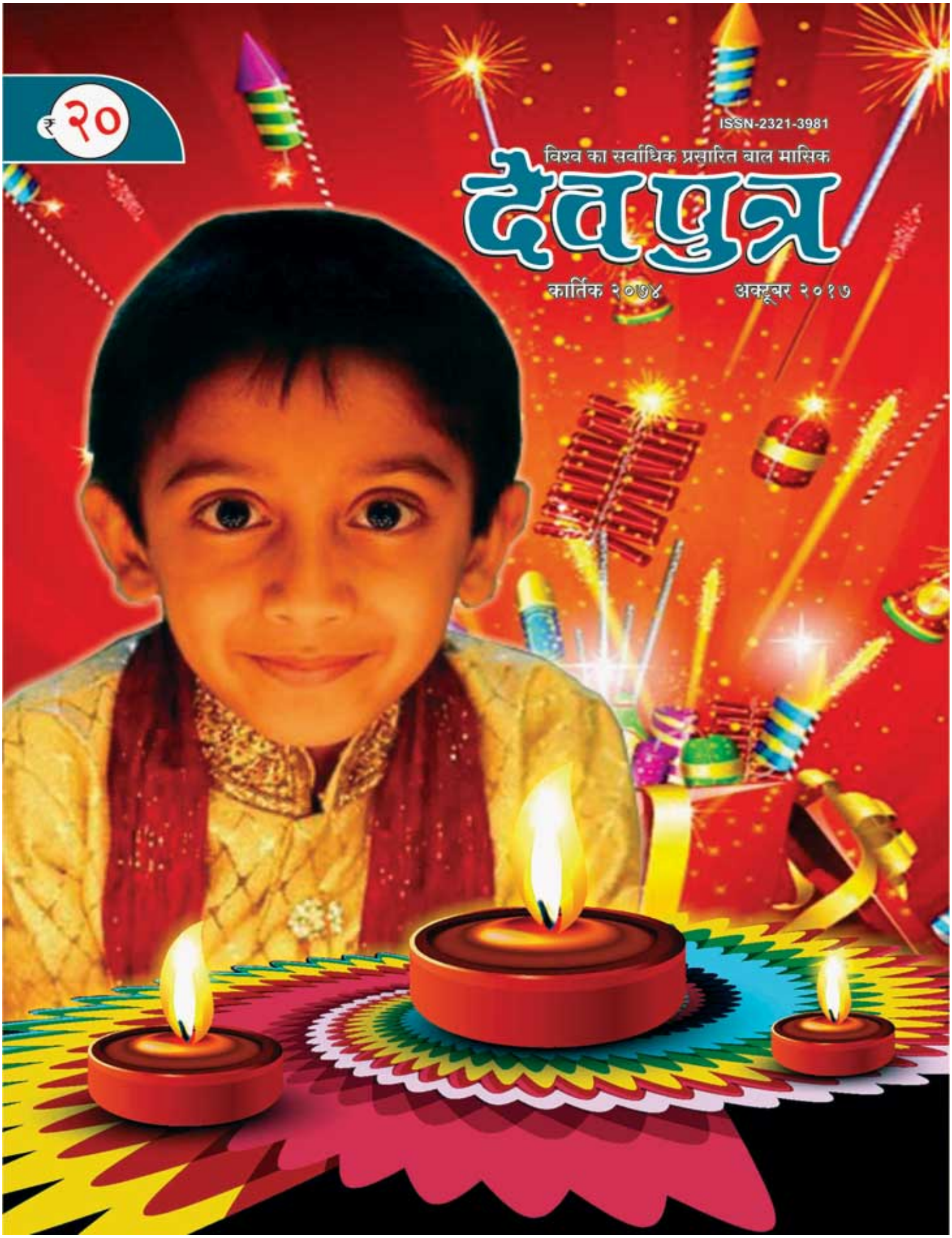

₹ २०
ISSN-2321-3981
विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक
देवपुत्र
कार्तिक २०७४
अक्टूबर २०१७

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

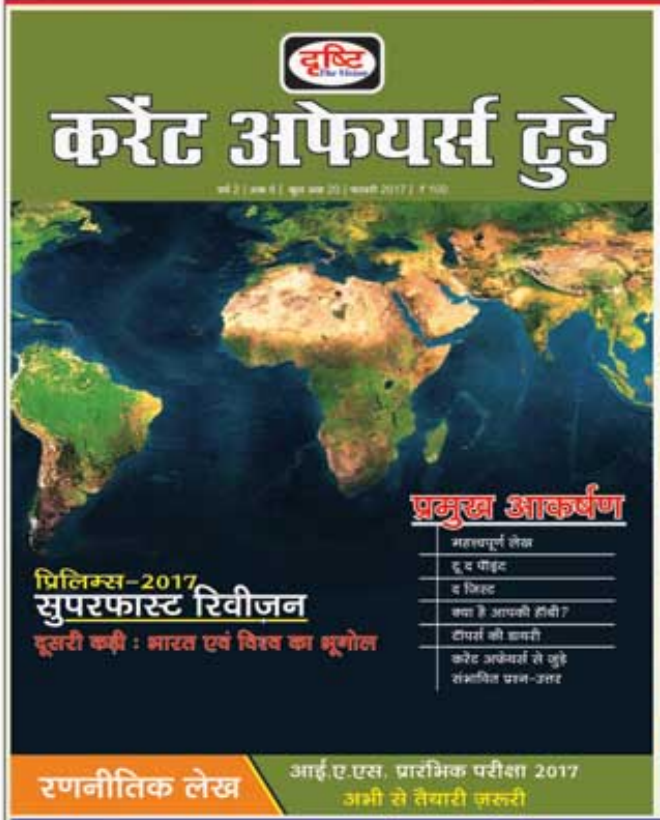

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।

आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं अपनी लोकप्रिय वेबसाइट पर

www.drishtiias.com

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें- (+91) 8130392355

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011-47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

कार्तिक २०७४ ▪ वर्ष ३८
अक्टूबर २०१७ ▪ अंक ४

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com

सीधे देवपुत्र के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या -53003591451
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनों!

"यदि तुम सच्चे मन से भारत की सेवा करना चाहती हो तो तुम्हें इस देश की आत्मा में लीन होना होगा। भारतीयों के सुख-दुःख:, अज्ञान- अंधविश्वास, विपत्तियाँ-बाधाओं को अपना मानकर सहन करना होगा और साधना एवं कठिन तपस्या से अनेक कष्टों का निवारण करना होगा।" यह उद्‌गार थे भारतीय संस्कृति के आलोक पुरुष कहे जाने वाले एक युवा संन्यासी के और उन्हें सम्पूर्ण गहराई से आत्मसात् करने को प्रस्तुत थी एक युवा शिष्या। जिसकी न जन्मभूमि भारतीय थी न धर्म। उल्टे वह तो जन्म से उस धर्म की अनुयायी थी जिसे मानने वाले भारत में आते भी तो भारतीयों पर शासन करने के उद्देश्य से। उन्हें लूटने के लिए और कभी सेवा का मुखौटा पहन कर भारतीय धर्म-संस्कृति के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न कर अपने धर्म में धर्मांतरित कर लेने। लेकिन गुरु शिष्य की यह जोड़ी तो संसार भर में सबसे ही विलक्षण थी। गुरु जो केवल और केवल ज्योतिपुंज थे निर्मल, प्रखर, सर्वथा कालिमा रहित और शिष्या मानो कर्पूर का निर्मल टुकड़ा जो प्रतीक्षा में था केवल इस ज्योतिपुंज से निकली एक चिंगारी के छू जाने भर का। उस छुवन के बाद तो उसका सर्वस्व केवल प्रकाश वितरण के लिए ही था। **'मार्गरिट नोबल'** नाम था उस महान शिष्या का। आयरलैण्ड के उत्तरी क्षेत्र में 'अलस्टर' में २४ अक्टूबर १८६७ को जनमी ईसाई कन्या। जन्म के समय माँ ने संकल्प लिया, इस कन्या को प्रभु की सेवा में समर्पित करूँगी। प्रभु ने प्रार्थना स्वीकारी। जनवरी १८९५ लंदन का पिकाडली स्थित प्रिंसेस सभागृह साक्षी बना जब मार्गरिट की भेंट स्वामी विवेकानंद से हुई। माँ का सकल्प ऐसे फलेगा तब किसी को ज्ञात न था पर वह फला। कुछ ही वर्ष में मार्गरिट प्रभु की सेवा करने स्वामी जी के साथ प्रभु की भूमि भारत आ गई **'निवेदिता'** बन कर। गुरुमंत्र मिला Love india serve india भारत से प्रेम करो भारत की सेवा करो। भारत में सेवा करने तो और भी लोग आते रहे पर सेवा की आड़ में भारतीयों को उनकी संस्कृति एवं धर्म को भुलाकर अभारतीय और, विधर्मी बनाने वाले मिशनरियों से यह आयरिश कन्या सर्वथा भिन्न थी। विलक्षण थी क्योंकि इसने अपनी सेवा से भारत को भूलना नही भारत को जानना सिखाया।

वे भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय हुई तथा सेवा और शिक्षा से भारतीय समाज, विशेष रूप से नारियों एवं बंचितों के लिए प्रज्वलित दीप शिखा बनकर घूमती रहीं। उनके गुरु ने सिखाया जिस प्रभु को तुम्हें समर्पित होना है वह यही है 'दरिद्रनारायण'।

निवेदिता की भारतीय समाज से इतनी आत्मीयता स्थापित हो गई कि महर्षि अरविन्द ने उनके नाम से एक विशेषण जोड़ दिया और वे हो गई **'भगिनी निवेदिता'**। कवीन्द्र ने कहा- अधिकतर लोग समय से, धन से, तन से सेवा करते देखे गए है दिल से नहीं। निवेदिता दिल से सेवा करती है।" उन्होंने निवेदिता को **लोकमाता** कह कर सम्मानित किया।

अभारतीय होकर भी परमभारतीय भगिनी निवेदिता का यह १५०वाँ जयन्ती वर्ष है। उनके चरित्र आचार एवं विचारों से अपने मन के दीप अलोकित कर सच्चे भारतीय बनने का यह एक पावन अवसर है हम सबके लिए।

आलोक पर्व दीपावली की अनन्त शुभकामनाओं सहित...

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- जंगल में दीपावली - डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ०५
- सफाई मण्डली - कुसुम अग्रवाल २४
- दादी माँ - डॉ. राजीव गुप्ता ३६

आलेख

- हमारे राष्ट्रपति - डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी १५

अनुवाद

- दादाजी का चश्मा -शिवचरण मंत्री ३०

एकांकी

- जादू नहीं जागृति - डॉ. सेवा नन्दवाल १०

लघुकथा

- प्यार के पग - मीरा जैन ०८

कविता

- सीख तुम्हीं से... - डॉ. देशबन्धु शाहजहाँपुरी ०८
- बापू - डॉ. शकुन्तला कालरा १३
- चंदामामा - पवन पहाड़िया २१
- एक कदम... - प्रेमकिशोर पटेल ३०
- इमली चख - डॉ. फहीम अहमद ३१
- सौ रुपैया चांदी के - डॉ. मालती शर्मा 'गोपिका' ३५
- तकली रानी - हरप्रसाद रोशन ३९

स्तंभ

- गाथा वीर शिवाजी की (१०) - २०
- कामरूप के संत... डॉ. देवेनचंद्र दास 'सुदामा' ३४
- आपकी पाती - ४०
- पुस्तक परिचय - ४२
- चुटकुले - १६

चित्रकथा

- इस दिवाली - देवांशु वत्स १२

प्रसंग

- माली की सीख - डॉ. राकेश चक्र १६
- धमकी का असर - कमल सौगानी १९
- गाली के बदले पुष्प - डॉ. श्याम मनोहर व्यास २८
- रामतीर्थ ने सीखी... - सांवलाराम नामा २९
- प्रेमचंद की उदारता - रामभाऊ शौचे ४०
- भारत माता की जय - शैवाल सत्यार्थी ४५

बाल प्रस्तुति

- हे तुलसी माँ - ऋचा अग्रहरि १८
- नील गगन में तारे - प्रियंका प्रजापति ३७
- भगवान को पत्र - अलीशा सक्सेना ४१
- दीवाली मनाएं लेकिन... - रिया कश्यप ४४

जंगल में दीपावली

कहानी : डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

दीपक वन का राजा दुर्दान्त सिंह बड़े ही क्रूर स्वभाव का था। वन के जीव जन्तुओं में हिंसा और आतंकवाद की दशहत फैली थी। बड़े जन्तु छोटे जन्तुओं को देखते ही खा जाते थे। अनुशासन का नाम तक न रह गया था।

तभी चुनाव का समय आ गया। सारे वन में चुनाव का बिगुल बज गया था। सभी जीव जन्तु अपने अधिकार के प्रयोग में लग गए। इस बार जन्तुओं ने चुनाव में दुर्दान्त सिंह को नकार दिया और

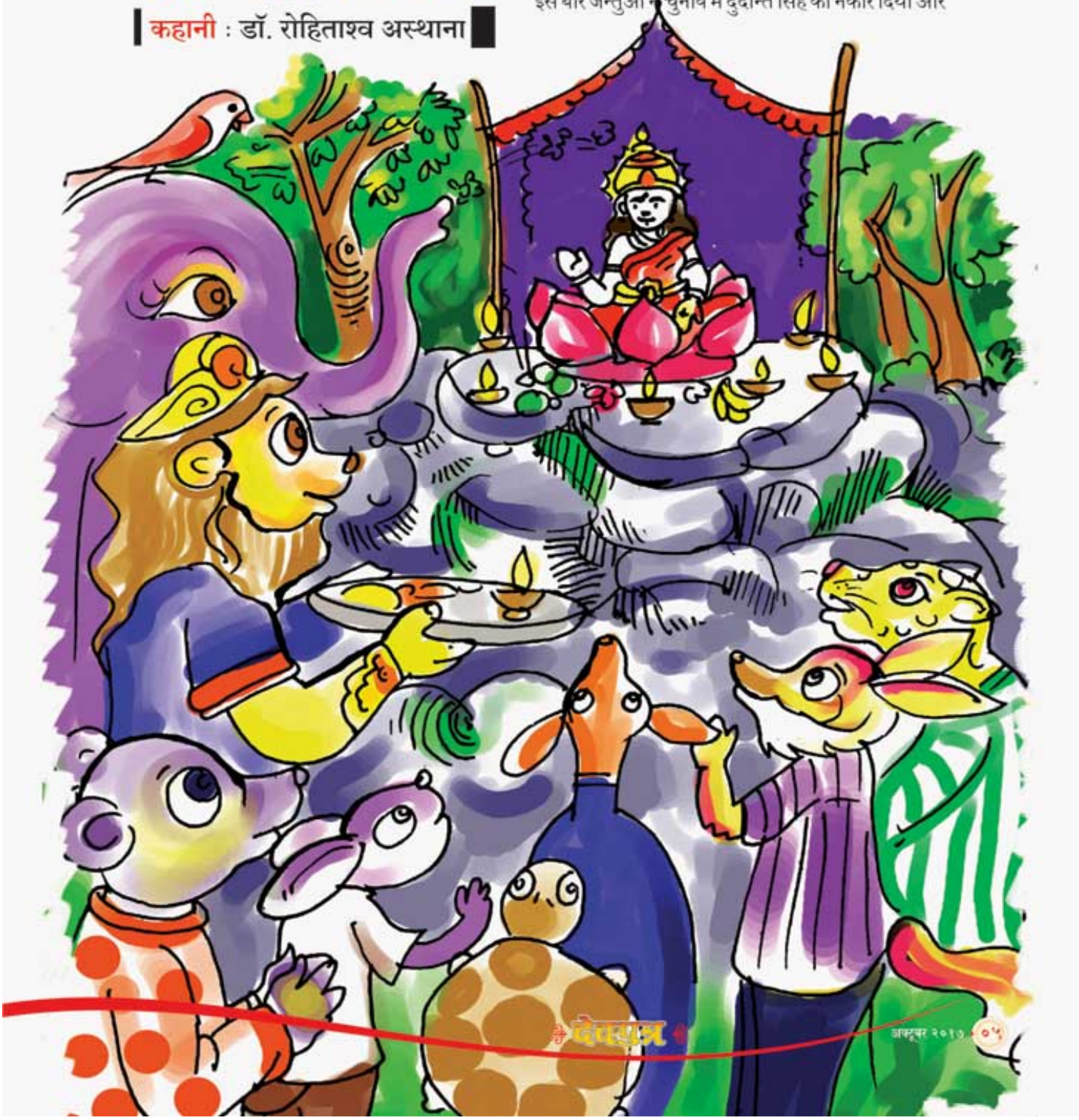

शक्ति सिंह को अपना नया राजा चुन लिया। वह बड़ा ही उदार हृदय और अनुशासन प्रिय युवा सम्राट था।

उसने सिंहासन पर बैठते ही सभी जीव जन्तुओं की सभा बुलाकर सबसे निर्भय होकर रहने को कहा। उसने समझाया कि ''हमारा उद्देश्य तभी पूरा होगा जब भेड़ और भेड़िया एक ही घाट पर पानी पी सकें।''

दीपावली का त्योहार आने वाला था। सभी जन्तुओं ने दीपक वन में रोशनी करके हँसी खुशी दीपावली मनाने का निश्चय किया। भालू दादा को दीपक वन की सजावट का काम सौंपा गया। वे नगर के अशोक टेन्ट हाउस में जाकर दीपक वन को सजाने तथा प्रकाश से जगमगाने का आदेश दे आए।

फलों की व्यवस्था का काम लोमड़ी रानी को सौंपा गया। उन्होंने मीठे-मीठे सीताफल, सेब, अनार तथा अन्य फलों की जमकर खरीददारी की।

मिठाई तथा पकवानों की जिम्मेदारी चीता सिंह को दी गई। वे खुशी से गरजते गुर्राते और छलाँग लगाते हुए मोटू हलवाई के पास पहुँचे तथा उसे पूरी दुकान सहित वन में बुला लाए।

गणेश लक्ष्मी की मूर्तियां बनवाने काम हाथी दादा को मिला। वे नगर के एक मूर्तिकार को बुला लाए। राम छैनी हथौड़ा लेकर पत्थरों को तराशने तथा मूर्तियाँ बनाने में लग गए।

पटाखे, अनार, फुलझड़ियाँ तथा अन्य आतिशबाजी लाने का काम लकड़बग्घे को दिया गया। उन्होंने अपने परिचित सप्पू दादा को आतिशबाजी की पूरी दुकान सहित वन में आमंत्रित कर लिया।

इस प्रकार दीपक वन में चहल-पहल हो गई। सारा जंगल मंगलमय हो उठा था। देखते ही देखते दीपावली का दिन आ गया।

वन्य जीवों के बच्चे खुशी से फल, मिठाइयाँ, पटाखे आदि खरीदते फिर रहे थे।

शाम को मिस्टर राम ने एक ऊँची चट्टान पर लक्ष्मी गणेश की मूर्तियाँ सजा दीं। सारा दीपक वन प्रकाश से जगमगा रहा था। राजा शक्ति सिंह निश्चित समय पर वहाँ पहुँचे। सबने फूल मालाएँ पहनाकर उनका स्वागत किया। राजा ने सबके साथ मिलकर लक्ष्मी गणेश का पूजन किया। वन्य जन्तुओं के बच्चों ने बड़े बुजुर्गों के साथ मिकर आतिशबाजी का आनन्द लिया। दीपावली पर पुराने बैर भूलकर उलूकदेव और चमगादड़ राजा भी उपस्थित हुए। सबने राजा के साथ मिलकर बैठकर पेटभर फल, मिठाई और पकवान खाए। बाद में सबने मिलकर गीत-संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। गधे ने गीत गाया, मेंढक दादा ने ढोल बजाया और कोयल रानी ने दीपक राग गुनगुनाया। सारा जंगल प्रकाश से जगमगा उठा। सभी के दिलों में खुशियों के हजार-हजार दीप जल उठे।

राजा शक्ति सिंह ने सबको एकता के महत्व से परिचित कराते हुए कहा कि एकता, मेलजोल और भाईचारे के कारण हम लोग इतने शानदार ढंग से जंगल में दीपावली मना सके। इससे मनुष्यों और पशुओं के बीच का आपसी भय भी कम हुआ। बल्कि यों कहें कि मनुष्यों के साथ भी हम पशुओं की दोस्ती बढ़ी। सब लोग इस परम्परा को कायम रखना तथा हिंसा और आतंकवाद को न पनपने देना। तभी हमारा दीपक वन सभी वनों में श्रेष्ठ कहलाएगा।

● हरदोई (उ.प्र.)

दोनों चित्रों में आठ अंतर बताओ

- देवांशु वत्स

(उत्तर इसी अंक में)

सीख तुम्हीं से सीखें बालक

कविता : डॉ. देशबन्धु शाहजहाँपुरी

बहस छिड़ी थी दीवाली में,
कौन है सबसे प्यारा।
गाँव, शहर के हर बालक को,
लगता सबसे न्यारा।
कौन खुशी भर देता दिल में,
उल्लसित मन कब तक।
सभी पटाखों ने मिल करके,
कर डाली एक बैठक।
इतराकर बोली फुलझड़ियाँ,
मैं हूँ बहुत दुलारी।
अन्धकार में जगमग करके,
बन जाती फुलवारी।
आँखें मटका करके बोली,
सुर सुरु कर सीटी।
हर दीवाली पर मैंने ही,
घर घर बाजी जीती।

फिर फिरकी बोली बिन मेरे,
दिखती नहीं उमंग।
मेरा नृत्य देखकर नाचें,
मिल करके सब संग।
सबकी बातें सुनकर बोला,
बम थोड़ा मुस्काकर।
क्यों लड़ते हो आपस में तुम,
सोचो ध्यान लगाकर।
जब हम जलते, तब खुशी होती,
है यह दुनिया सारी।
हमको जलता देख गूंजती,
बच्चों की किलकारी।
नष्ट स्वयं को करके जो भी,
जग में खुशी लुटाता।
सीख तुम्हीं से सीखें बालक,
वही महान कहाता।

• शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

प्यार के पग

लघुकथा : मीरा जैन

दीपावली की राज अनिल ने खीझते हुए लगभग ऊंचे स्वर में कहा– ''देख रही हो अपने प्यार का परिणाम और करो इन बच्चों से प्यार? खुद का घर छोड़कर हमारे घर के आगे पटाखे फोड़–फोड़ कर कचरे का ढेर लगा दिया, ताकि उनका आंगन एकदम साफ रहे ये बच्चे इतने सीधे नहीं हैं जितना तुम समझती हो।''

हर बार अड़ोस–पड़ोस के बच्चों का पक्ष लेने वाली लता ने इस बार पति की हाँ में हाँ मिलाई–''हाँ अनिल! अब मुझे भी लगने लगा है कि ये बच्चे मेरे प्यार का, सिधाई का नजायज फायदा उठा रहे हैं। होली हो या दीपवाली या फिर पतंगबाजी सबके लिए हमारा ही घर, पड़ोसी चाहे कुछ भी सोचें आज तो मैं उन्हें डांट कर ही रहूंगी।''

इतना कह लता ने पूरे जोश के साथ बाहर का रुख किया। बच्चों को डांटती इससे पूर्व ही बबलू का रुदन सुन वहीं ठिठक गई।

शायद सीमा ने एक आद थप्पड़ रसीद किया है और ध्यान से उसका स्पष्टीकरण सुनने लगी जो वह अपनी माँ को दे रहा था– '' माफ कर दो माँ! गलती हो गई। हम बच्चों ने ये तो सोचा ही नहीं कि लता काकी के घर के सामने कचरा होगा। हम तो केवल इसलिए उनके घर के सामने पटाखे फोड़ रहे थे, ताकि उन्हें भैया और दीदी जो बाहर पढ़ने गए हैं, उनकी कमी महसूस न हो। आखिर वे भी तो माँ हैं और आपकी तरह हमें बहुत प्यार करती हैं।''

इतना सुनते ही लता की आँखें भर आई उसे महसूस हुआ उसके प्यार से कहीं ज्यादा ऊंची बच्चों की भावनाएँ हैं। वहीं कचरे का ढेर लता और करीब ही खड़े अनिल को बच्चों के प्यार का अनमोल उपहार नजर आ रहा था। दोनों ने इस बात को मन से स्वीकार लिया था कि बच्चे वास्तव में भगवान का ही रूप होते हैं। साथ ही वे दोनों बच्चों के साथ मिल दीपावली की खुशियाँ दुगुनी करने में शामिल हो गए।

• उज्जैन (म.प्र.)

पितांबरी®
अभिनव उत्पाद
नई चमक, प्राकृतिक सुगंध,
पितांबरी उत्पादों के साथ बढ़ाइये
दिवाली का आनंद
The Original & No.1 Brand
NEW
Pitambari
Shining Powder
With Extra Power
& Pleasant Fragrance
200 g
COPPER
BRASS
ALUMINIUM
IRON
SILVER
देवभक्ती
सप्तर्षी-भारद्वाज
7 in 1
नई पितांबरी®
अब चमकाएं पांच धातू!
20 Fragrance 66 Packs
CIN : U24239MH1989PTC051314.
Pitambari Products Pvt. Ltd.
Thane Tel: 022- 67035555, CRM No.: 022-6703 5564, 5699. Toll Free: 180030701044
Now Shop Online On : amazon.in
www.pitambari.com/shop

जादू नहीं जागृति

एकांकी : डॉ. सेवा नन्दवाल

लक्ष्मी जी – धन की देवी
कतिपय समवयस्क बच्चे – कुश, प्रथम, मालवी, शुचिता

(दृश्य प्रथम)

(दीपावली को रात्रि को कुश के घर उसके कुछ समवयस्क मित्र एकत्रित हुए हैं।)

लक्ष्मी जी – (आँखें खोलकर, मुस्कुराते हुए) बताइए चाण्डाल–चौकड़ी ने हमें क्यों याद किया?

कुश– (खिसियाते हुए) – हम चांडाल चौकड़ी नहीं चार चतुर की टोली हैं।

लक्ष्मी जी– हमें क्यों पुकारा वह भी एक साथ?

मालवी– मैया! क्यों अंजान बन रही हो। दीपावली की रात कोई क्यों याद करेगा?

शुचिता – आप तो अंतर्यामी हैं।

लक्ष्मी जी – मस्का मारना छोड़ो क्या चाहिए बोलो, परीक्षा में अच्छे अंक चाहिए?

प्रथम– नही मैया! वह तो मेहनत करके आ जाते हैं।

लक्ष्मी जी – फिर कोई नया महंगा खिलौना चाहिए?

कुश– नहीं मैया!

लक्ष्मी जी – तो बहुत सारा धन चाहिए होगा ताकि मौज मस्ती कर सको, खूब घूम फिर सको।

मालवी – आपका दिया हुआ सब कुछ हमारे पास है।

लक्ष्मी जी – क्या अक्ल, बुद्धिमानी, सद्बुद्धि चाहिए?

'शुचिता (मुस्कुराते हुए) – हम तो चतुर हैं।

लक्ष्मी जी– यह तो वरदान चाहते हो कि कोई कठिनाई तुम्हारा दरवाजा न खटखटाए।

प्रथम – नहीं मैया! हम कठिनाई से डरते नहीं।

लक्ष्मी जी – अच्छे स्वास्थ्य की सबको आवश्यकता होती है तुम्हें भी होगी।

मालवी (सकुचाते हुए)– नहीं!

लक्ष्मी जी – आश्चर्य की बात है... तुम लोगों को धन नहीं चाहिए, बुद्धि नहीं चाहिए, परीक्षा में अच्छे अंक नहीं चाहिए फिर चाहिए क्या? इसके अतिरिक्त और क्या अभिलाषा हो सकती है?

कुश (झिझकते हुए) – वास्तव में हमारा एक शत्रु है।

मालवी – वह बहुत शक्तिशाली है।

प्रथम – हम उसे परास्त करना चाहते हैं।

शुचिता – लेकिन चिंता की बात यह है कि हम अकेले उसका मुकाबला नहीं कर सकते।

लक्ष्मी जी – अर्थात् वह तुम सबका सामुहिक शत्रु है फिर तुम सब मिलकर उसका मुकाबला क्यों नहीं करते? सुना नहीं एकता में शक्ति होती है।

कुश – यह हमारे बलबूते की बात नहीं। हमें आपके सहयोग की जरूरत पड़ेगी।

लक्ष्मी जी – चलो ठीक है। यह बताओ शत्रु मनुष्य है या पशु, परिंदा या कीड़ा मकौड़ा?

प्रथम– इनमें से कुछ नहीं।

लक्ष्मी जी – उसका निवास कहां है...पृथ्वी पर, आकाश में, स्वर्ग में?

मालवी – पृथ्वी पर सर्वत्र।

लक्ष्मी जी (आश्चर्यपूर्वक) – पृथ्वी पर सर्वत्र...इतना विस्तार है उसका?

शुचिता –उसके बहुत सारे मुँह और भुजाएं हैं।

कुश – हम तो धीरे–धीरे बढ़ते हैं मगर उसका फैलाव बहुत तेजी से होता है।

लक्ष्मी जी – क्यों पहेलियाँ बुझा रहे हो, स्पष्ट क्यों नहीं कहते।

प्रथम– पहले आप वचन दीजिए कि उस शत्रु को मार गिराएंगी?

लक्ष्मी जी – नाम तो बताओ बच्चों उसका।

मालवी – उसका नाम है डायन....

लक्ष्मी जी (बात काटते) – ये डायन, भूत, प्रेत सब हवा होती हैं। वास्तव में यह वहम है, तुम्हारी कल्पनाओं में होता है।

मालवी– आप पूरी बात सुनिए, उसका पूरा नाम है डायन महंगाई... उसने आम लोगों का जीवन मुश्किल कर दिया है।

लक्ष्मी जी– भक्तों के व्यवहार से, उनके चढावे से सब पता चल जाता है।

कुश – बस तो हम उसी डायन महंगाई का संहार चाहते हैं।

लक्ष्मी जी – देखो बच्चों! यह समस्या मानव द्वारा निर्मित हुई है इसलिए तुम ही उसे दूर कर सकते हो।

शुचिता – हम करने को तत्पर हैं मगर कोई रास्ता तो बताइए।

लक्ष्मी जी – संगठित होकर, एकजुट होकर, अगर कोई दुकानदार कालाबाजारी करता है, वस्तुओं का संग्रह कर कृत्रिम कमी दर्शाता है, माल दबाकर रखता है...अगर ऐसा कहीं होते देखो तो उसे शीघ्र रोको, सक्षम अधिकारी से शिकायत करो।

कुश– क्या यह सरकार का दायित्व नहीं?

लक्ष्मी जी– सरकार का भी है इसलिए अपनी संगठित आवाज से उस पर दबाव बनाओ। याद रखो हाथ पर हाथ रखकर सरकार को कोसने से नहीं बल्कि स्वयं आगे बढ़कर ठोस प्रयास करने से किसी भी समस्या पर रोक लगा सकते हो।

प्रथम – क्या मैया हम तो समझते थे कि आपके पास ऐसी कोई जादू की छड़ी होगी जो पलक झपकते ही हमें इस मंहगाई से छुटकारा दिला देगी।

लक्ष्मी जी– नहीं बिल्कुल नहीं। हाँ अगर तुम ईमानदारी से प्रयास करोगे तो हमारा आशीर्वाद साथ है। मैं उसी की मदद करती हूँ जो स्वयं अपनी मदद करता है। हाँ एक बात और... हमें बच्चों से सबसे अधिक आशाएं हैं। अब मेरा समय समाप्त हुआ चलती हूँ।

(कहते हुए लक्ष्मी जी खामोश हो जाती हैं। धीरे–धीरे पर्दा गिरने लगता है।)

● **इन्दौर (म.प्र.)**

इस दिवाली

कथा - अरविंद कु. साहू
चित्रकथा - देवांशु वत्स

एक तरकीब है! पटाखों की वजह से कचरा फैल जाता है! क्यों न हम उसकी सफाई कर लें!
ओह!
अरे बुद्धू यह तो अगले दिन की बात है!
अभी तो दिवाली के दिन की योजना बना रही है। कोई सुझाव हो तो दो!
ओह!
एक और तरकीब है! हम लोगों ने पहले से ही पटाखे छुड़ाना बंद कर दिया है...
... हम हर साल पटाखे के पैसे बचा कर पार्टी मनाते है! क्यो न इस बार गरीब बस्ती...
... के बच्चों को भी शामिल कर लें।
सभी बच्चों को यह तरकीब पसंद आई।
बहुत बढ़िया!
वाह! कमाल की तरकीब है!
हाँ, यही ठीक रहेगा!
तो चलो, फिर तैयारियाँ करते है!
हाँ!

बस! फिर क्या था! सभी बच्चों को अलग-अलग जिम्मेदारियाँ दी गई। हाथ में आमंत्रण पत्र भी तैयार हो गए। तय हुआ कि सबसे अच्छा गाने वाले बच्चे को पुरस्कार भी दिया जाएगा। फिर बच्चे गरीब बस्ती पहुँचे।

फिर तो दिवाली की रात बच्चों ने खूब जलवे बिखेरे। बच्चों के माँ-पिताजी ने भी उनका सहयोग किया। बच्चों की प्रतिभा और मस्ती देखकर बड़े भी दंग थे!

फिर मिठाइयां, बताशे भी बांटे। कइयों को पुरस्कार भी मिले। मुहल्ले के बच्चों को बस्ती के बच्चों से दोस्ती हो गई। जब बस्ती के बच्चे जाने लगे तो उनके हाथ में ढेर सारे उपहार थे।

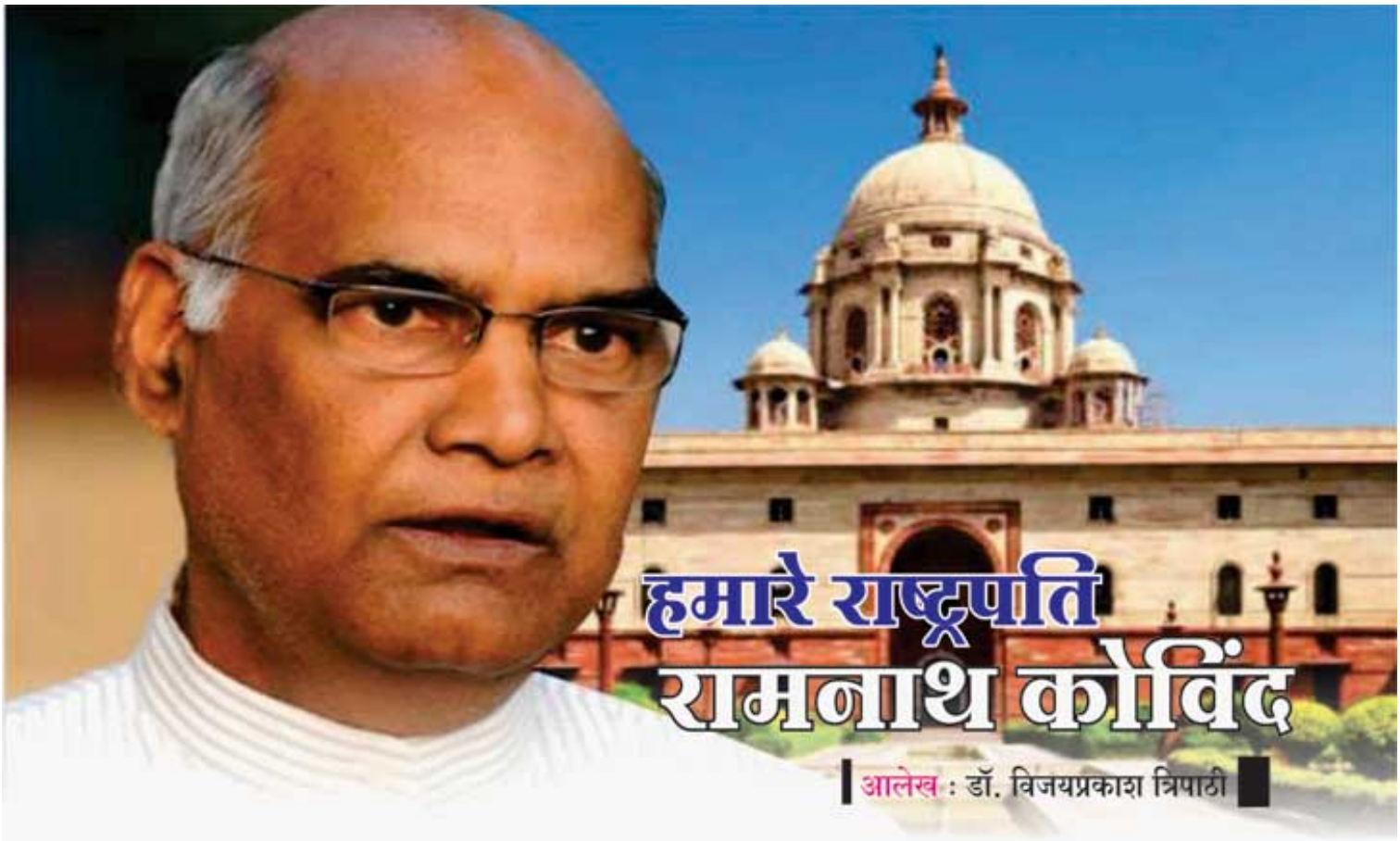

हमारे राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद

आलेख : डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

प्यारे बच्चों! आज तुम्हें हम अपने देश के नए राष्ट्रपति मा. रामनाथ कोविंद जी का परिचय करा रहा हूँ।

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद का जन्म उ.प्र. के कानपुर देहात जिले के तहसील डेरापुर स्थित एक छोटे से गाँव 'परौंख' में १ अक्टूबर १९४५ को हुआ था। आपके पिता का नाम स्व. श्री मैकूलाल कोरी व मातुश्री का नाम स्व. श्रीमती फूलमती था। आप सात भाई–बहिनों में सबसे छोटे थे। राष्ट्रपति महोदय की प्रारम्भिक शिक्षा गांव के प्राथमिक विद्यालय में हुई। कक्षा ५वीं उत्तीर्ण करने के उपरान्त आपने अपने गांव 'परौंख' से आठ कि.मी. दूर 'खानपुर डिलवल' के परिषदीय जूनियर स्कूल में कक्षा आठ तक पढ़ाई की थी। फिर आगे की पढ़ाई आपने कानपुर नगर के बी.एन.एस.डी. इण्टर कॉलेज, चुन्नीगंज से हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की। फिर स्थानीय डी.ए.वी. कॉलेज ने इण्टर व बी.कॉम परीक्षा उत्तीर्ण कर स्नातक बने रामनाथ जी ने डी.सी. लॉ कॉलेज से वकालत की पढ़ाई की।

राष्ट्रपति महोदय कानपुर से पढाई पूरी करके आई.ए.एस. की तैयारी हेतु नई दिल्ली आ गए। दिल्ली में ही रहकर सिविल सर्विसेज के तीसरे प्रयास में ही आई ए.एस. परीक्षा उत्तीर्ण कर ली, लेकिन मुख्य सेवा के बजाए एलाएड सेवा में चयन होने पर नौकरी को ठुकरा दिया। आपातकाल के बाद जून १९७६ में आपने दिल्ली में हाईकोर्ट और फिर सुप्रीम कोर्ट में वकालत की। १९८० आपका राजनीतिक कॅरियर प्रारम्भ हुआ।

जब आप दिल्ली हाईकोर्ट में वकालत कर रहे थे उसी समय आपने टेलीफोन विभाग में कार्यरत सुश्री सरिता जी के साथ ३० जून १९७४ को विवाह कर परिणय सूत्र में बँध गए। विवाहोपरान्त पत्नी सरिता जी ने नौकरी छोड़ दी और कोविन्द जी तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के निजी सचिव बन गए।

आप दलित परिवार से हैं। अत्यंत गरीबी में पढ़कर आपने दलित समाज के उत्थान हेतु सदैव संलग्न रहे। आज वे भारतीय गणतंत्र के महामहिम राष्ट्रपति पद को सुशोभित कर राष्ट्रसेवा में संलग्न हैं।

राष्ट्रपति महोदय को बच्चों से अत्यंत प्रेम रहा है। वे प्रायः बच्चों को यह शिक्षा देते आ रहे हैं कि पढ–लिखकर वे देश के एक सुयोग्य नागरिक बनें। बच्चों को वे बाल साहित्य की पुस्तकें खरीदकर बाँट दिया करते थे। अपने गाँव के परिवार के बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रेरित करने की उनकी भावना सदैव प्रबल रही है।

● कानपुर (उ.प्र.)

॥ लाल बहादुर शास्त्री जयंती : २ अक्टूबर ॥

माली की सीख

प्रसंग : डॉ. राकेश चक्र

बसंत का उल्लास भरा बसंती मौसम था। बाग बगीचों में तरह–तरह के फूल खिले थे। कई बच्चे अपने–अपने घरों से मंदिर के आंगन में पहुंच गए थे। उन बच्चों में लाल बहादुर नाम का एक छः वर्षीय बच्चा भी था। वह अन्य बच्चों की तरह नटखट न था। शरीर से दुबला–पतला।

बच्चों ने आपस में सलाह की कि आज बाग में चलेंगे और फूल तोड़कर लाएंगे...खूब मजा आएगा...फूलों को उड़ा उड़ाकर खेलेंगे।

सब बच्चे बाग में पहुंचकर फूल तोड़ने लगे। मिनटों में ही सबने अपनी अपनी जेबें और झोलियां भर लीं। लाल बहादुर फूलों को निहार रहा था। उसका भी मन हुआ कि वह भी फूल तोड़े। उसने फूल तोड़ा ही था कि तभी चिल्लाता हुआ माली आ पहुंचा। सब बड़े बच्चे तो तुरत–फुरत भाग गए। लेकिन लाल बहादुर रंगे हाथ पकड़ा गया। माली ने उसे खूब मारा पीटा। नन्हा बच्चा रोया नहीं। उसने माली से शिकायत भरे लहजे में धीमे से कहा–''आपने मुझ इसलिए पीटा है न कि मैं कमजोर हूं और मेरे पिताजी नहीं है...।''

माली का गुस्सा ठण्डा हो गया।

उसने लाल बहादुर को सहलाया और प्यार किया। ''बेटा! मुझसे गलती हो गई।'' लेकिन उसने समझाते हुए कहा–''बेटा! पिताजी के न होने से तुम्हारी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है।''

यह सुनकर नन्हा लाल बहादुर जोर जोर से रोने लगा। यही बात उसके मन में घर कर गई। उसने निश्चय कर लिया कि वह ऐसा काम नहीं करेगा, जिससे किसी को तकलीफ पहुंचे। यही नन्हा बालक जब बड़ा हुआ तो देश को आजाद कराने के लिए स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़ा तथा अंग्रेजों के छक्के छुड़ाए। देश आजाद हुआ। तब यही बालक देश का ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ प्रधानमंत्री बना, लाल बहादुर शास्त्री।

• मुरादाबाद (उ.प्र.)

चुटकुले

• ऋषिमोहन श्रीवास्तव

पिता (बेटे से) - ''मोनू, पहले तो तुम्हारे अच्छे नम्बर आते थे पर अब...।''

मोनू- ''क्या करूं पिताजी! मास्टर जी मेरे आगे अब बेवकूफ बच्चे को बिठाने लगे हैं।''

****

मास्टर जी ने राम् से कोई प्रश्न पूछा। वह जबाब नहीं दे पाया। मास्टर जी बोले-राम्, तुम्हारे दिमाग में गोबर भरा है।''

राम्- ''जी, मास्टर जी आप शायद सही कह रहे हैं। कल एक गाय मेरा सिर सूंघ रही थी।

****

अध्यापक (विवेक से)- विवेक तुम्हारे नानाजी कहाँ रहते हैं।

विवेक - ''जी तिरूवनन्तपुरम् में।

अध्यापक - तिरूवनन्तपुरम् की स्पेलिंग बताओं?

विवेक - मास्टर जी, मुझे अभी याद आया वे अब गोवा में शिफ्ट हो गए है।

|| महात्मा गांधी जयंती : २ अक्टूबर ||

बापू

कविता : डॉ. शकुन्तला कालरा

देश-प्रेम का सबके मन में,
बापू ने भाव जगाया था।
'हमारा सब स्वदेशी' होगा
अंग्रेजों को समझाया था।
अपने देश के नेता होंगे,
नहीं विदेशी राज करेंगे।
राजकाज की भाषा अपनी,
हिन्दी के सिर ताज धरेंगे।
आजादी अधिकार हमारा,
यही हमारा इक सपना है।
हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख-ईसाई,
हर भारतवासी अपना है।
दीन-धर्म और जात-पात की,
अब न होगी कोई लड़ाई।
भारत के सब प्रान्त एक हैं
पंथ-निरपेक्षता सिखलाई।
आओ हम सब बच्चे मिलकर,
बापू के आदर्श अपनाएँ,
करें प्रतिज्ञा आज अभी हम,
सदा देश का मान बढ़ाएँ।

● दिल्ली

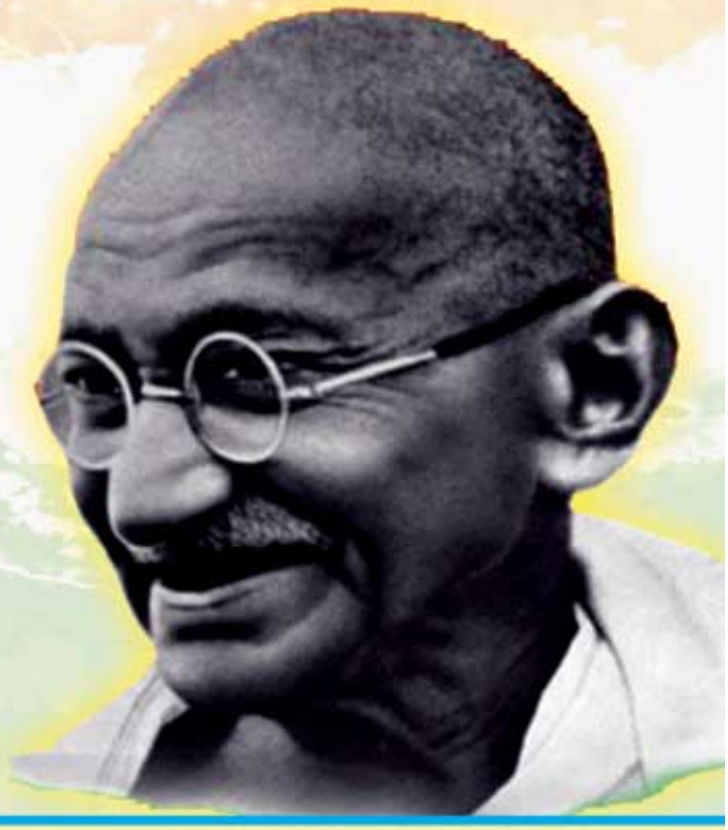

पप्पू- पिताजी! कल मैंने एक राकेट छोड़ा वह सीधा सूरज से टकरा गया।

बेटी- फिर क्या हुआ?

पप्पू- फिर मेरी पिटाई हुई।

बंटी- किसने पीटा?

पप्पू - सूरज ने।

****

सब्जीवाला सब्जी पर काफी देर से पानी छिड़क रहा था। ग्राहक गुस्से में बोला- भाई साहब! अगर भिण्डी को होश आ जाए तो एक किलो दे देना।

****

चिंकू- मैंने पिछले २० सालों से एक बात नोट की है।

पिंकू- क्या?

चिंकू- क्या?

चिंकू- यही कि जब जब भी फाटक बंद होता है ट्रेन जरूर आती है।

****

बांके का भाई अस्पताल में भर्ती था। ग्लूकोज चढ़ रहा था ड्रिप खत्म होने लगी तो उसने बांके से कहा- जा सिस्टर को बुलाकर ला।

बांके - तीन दिन बाद अपनी बहन को गाँव से बुलाकर ले आया।

● ग्वालियर (म.प्र.)

संस्कृति

प्रश्नमाला

(१) वनवास के लिए अयोध्या से निकलने के बाद श्रीराम ने सबसे पहले किसका आतिथ्य स्वीकार किया?

(२) गदाधर भीम के पौत्र का श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध प्रारम्भ होने के पूर्व ही वध कर दिया। वह कौन था?

(३) हजारों साल पहले दक्षिण भारत के लोगों का एक समूह, समुद्र मार्ग से पेरू (दक्षिण अमरीका) पहुँचा और वहाँ इंका सभ्यता की नींव डाली। वे लोग कौन थे?

(४) चार धामों में से भारत के पश्चिम में स्थित धाम कौन सा है?

(५) दशम् गुरु श्रीगोविन्दसिंह जी पश्चात् गुरु-गद्दी पर कौन प्रतिष्ठित हुआ?

(६) एक विशाल साम्राज्य से टक्कर ले एक कुसंस्कारी शासक का नाश कर सम्पूर्ण भारत को संगठित करने वाले आचार्य कौन थे?

(७) भारत के १८वीं शताब्दी के उन्नत विज्ञान और तंत्रज्ञान की जानकारी किन गांधीवादी विद्वान ने उक्त नाम की अपनी पुस्तक में दी है।

(८) १८५७ में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में सबसे पहला बलिदान किस स्वातंत्र्य योद्धा का हुआ?

(९) त्याग और बलिदान की अद्वितीय उदाहरण पन्ना धाया कहाँ की थी?

(१०) राकेट को अंतरिक्ष में प्रक्षेपित करने के काम में आने वाला कौन सा इंजन भारत के वैज्ञानिकों ने स्वदेश में ही बना लिया है?

(उत्तर इसी अंक में) (साभार : पाथेय कण)

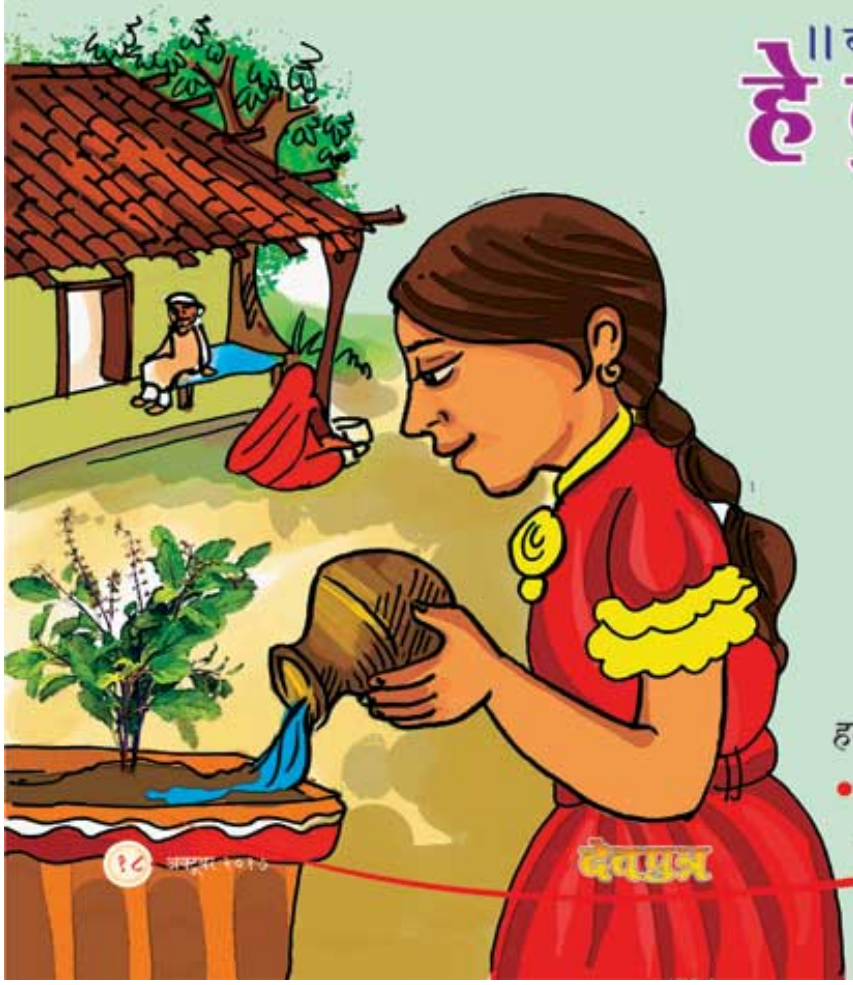

॥ बाल प्रस्तुति ॥

हे तुलसी माँ

कविता : ऋचा अग्रहरि

नन्ही सी एक लड़की
रोज सबेरे उठती
अपनी शीतल मन से
हाथों में जल लिए
तुलसी माँ को वह पूजती
अपने नन्हें हाथों से
रोज यही कामना करती कि
खुशी से भरा हो मेरा परिवार
हे तुलसी माँ
किसी को न हो दुःख का सामना
हमेशा पूजती रहे तुझे यह नेक कामना।

• बिर्रा (छ.ग.)

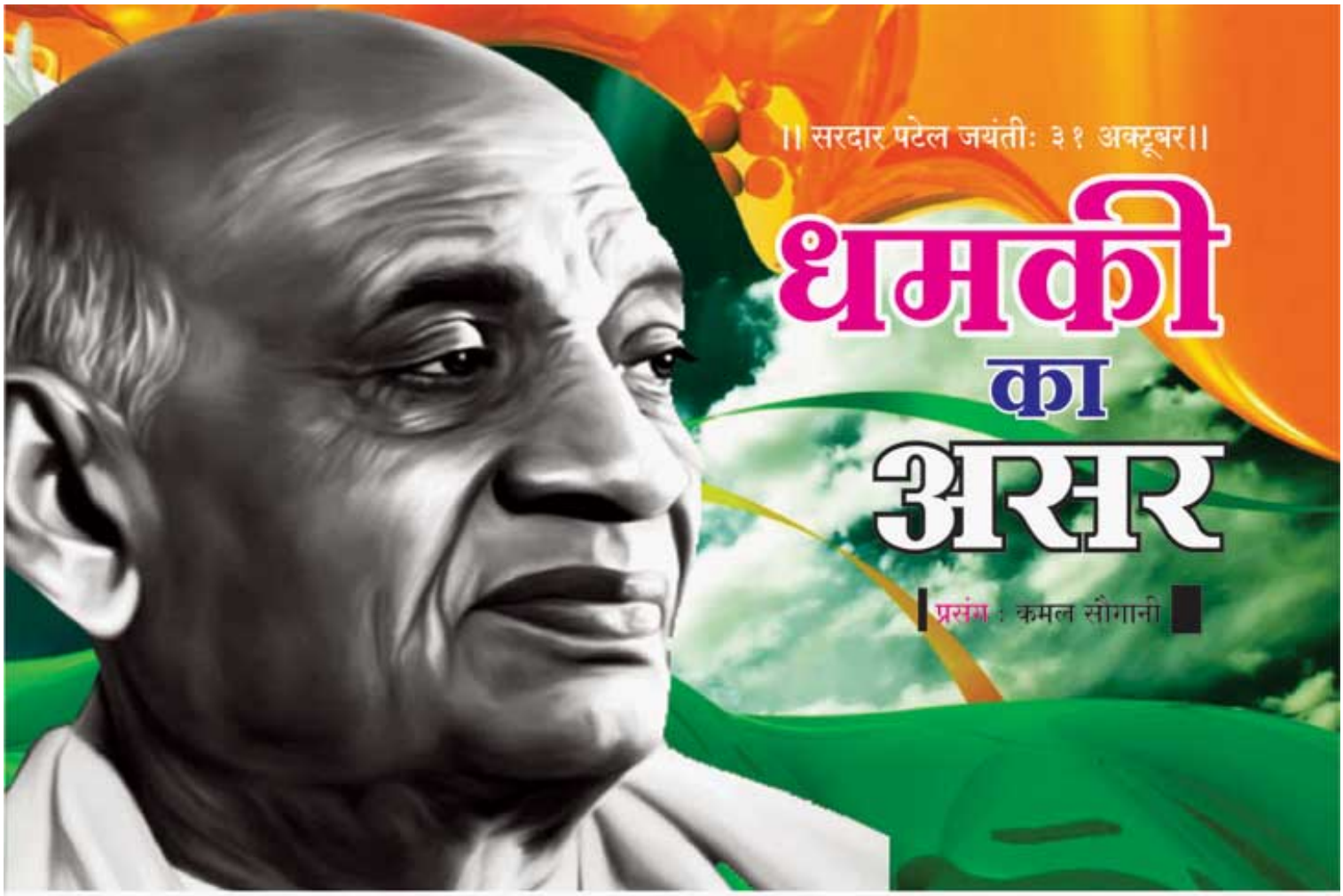

।। सरदार पटेल जयंतीः ३१ अक्टूबर।।

धमकी का असर

प्रसंग : कमल सोगानी

उन दिनों की बात है जब सरदार वल्लभ भाई पटेल अंग्रेज सरकार से संघर्ष करने के लिए बापू के पथ पर चल रहे थे। एक दिन बापू ने सरदार पटेल से कहा– ''पटेल जी, हमें एक मौन जुलूस निकालना चाहिए, ताकि अंग्रेज सरकार हम हिन्दुस्तानियों की एकता से घबराने लगे।''

सरदार पटेल ने कहा–'' ठीक है, हम लोग अगले रविवार को लोगों को एकत्रित कर विशाल मौन जुलूस निकालेंगे।''

जब रविवार का दिन आया तो एक विशाल जुलूस अहमदाबाद की सड़कों से गुजरा। जुलूस में हिन्दुस्तानियों की संख्या तीन लाख से भी अधिक थी। इतने हिन्दुस्तानियों को एक साथ देखकर अंग्रेज सरकार के अफसर बौखला उठे और एक दूसरे से चर्चा करते हुए बोले– ''यदि इन हिन्दुस्तानियों की एकता की शक्ति निरन्तर इस तरह बढ़ती रही तो हमारे शासन को एक दिन जरूर खतरा हो जाएगा। बस यही सोचकर जुलूस पर लाठी चार्ज किया गया। कई हिन्दुस्तानियों के साथ साथ सरदार पटेल व बापू को भी जेल में बंद कर दिया गया। जेल में हिन्दुस्तानी कैदियों के साथ उचित व्यवहार नहीं किया जाता। समय पर खाना भी नहीं दिया जाता।

एक दिन सरदार पटेल ने जेलर से स्नान के लिए गर्म पानी मांगा, लेकिन जेलर टालमटोल करने लगा। तब सरदार पटेल ने कड़क आवाज में कहा– ''देखो, तुम जेलर हो न, यहाँ के प्रबंधक नहीं हुआ तो तुम्हारे सारे फर्नीचर को जलाकर अपना पानी गर्म कर लूंगा। हाँ, तब फिर जो मन में हो करते रहना।''

सरदार पटेल की इस धमकी से जेलर थर–थर कांपने लगा। उसने दूसरे दिन से समस्त हिन्दुस्तानी कैदियों के लिए भोजन का उचित प्रबंध कराया तथा नहाने के लिए गर्म पानी की व्यवस्था भी की।

● भवानीमंडी (राज.)

बुत शिकन

बीजापुर अशान्त था। दिन का चैन और रात की नींद गायब हो गई थी। शिवाजी के सम्बन्ध में प्रतिदिन कोई न कोई समाचार आता और आदिलशाही के दिल पर हथौड़ा सा जा जमता। क्या करें, उससे कैसे निपटें जैसे प्रश्न मुँह बाए खड़े रहते परन्तु कोई उपाय समझ में न आता।

सुल्तान अली आदिलशाह की माँ बड़ी साहिबा बहुत तेज-तर्रार और क्रूर हृदय वाली औरत थीं। बीजापुर का प्रशासन उसी के संरक्षण में चल रहा था। क्या मजाल कोई चिड़िया भी उसकी इच्छा के विपरीत अपने पर फड़फड़ा जाए। बल्लोलखाँ की वफादारी में उसे किसी प्रकार संदेह हो गया, तो फौरन उसका सिर धड़ से अलग करा दिया। स्त्रियोचित ममता और दया तो उसे छू भी नहीं गई थी।

मुगलों और बीजापुर वालों की खटपट तो रहती थी ही। प्रायः मुठभेड़ हो जाती थी। ऐसी ही एक मुठभेड़ तब हुई थी जब औरंगजेब दक्षिण का सूबेदार था। बीजापुर की ओर से खान मुहम्मद सिपहसालर था। उसने औरंगजेब को अपने जाल में फंसा भी लिया था परन्तु वह किसी तरह निकल भागा। बस अब क्या था। बड़ी साहिबा गुस्से से आग बरसाने लगीं। भरे दरबार मे खान मुहम्मद के टुकड़े-टुकड़े करा दिये और किसी के भी मुंह से उफ् तक नहीं निकली।

आज वही बड़ी साहिबा महल की छत पर बैचेन चक्कर काटती हैं, बड़बड़ाती हैं और गुस्से से दाँत कटकटा कर रह जाती हैं। शिवाजी ने उसकी नाक में दम कर रखा है। उसकी हिम्मत जरूरत से ज्यादा बढ गई है और यहाँ कोई हिम्मत ही नहीं करता कि उससे दो-दो हाथ कर ले।

शिवाजी ने निपटने के उपाय सोचने के लिए सदा की तरह उस दिन भी बीजापुर दरबार लगा था। ज्योंही अली आदिलशाह ने दरबार में प्रवेश किया, सारा दरबार खड़ा हो गया। सरदारों ने भली-भांति अपना स्थान ग्रहण भी नहीं किया था कि तभी पर्दानशीन बड़ी साहिबा आ पधारीं और सुल्तान के सिंहासन के निकट ही बनी शानदार झरोखेदार गद्दी पर विराजमान हो गईं। दरबारियों को अपनी आँखों पर यकीन न हुआ। हड़बड़ा कर खड़े हुए और दमघुटे से खड़े के खड़े रह गए। सबकी सिट्टी गुम हो गई।

सुल्तान ने बात शुरु की- ''फिर वही मसला हमारे सामने है। इस शिवाजी के बच्चे से कैसे निबटें? हमने उसके बाप शाहजी को खत लिखा था, उसका जवाब आ गया है और उससे भी हमारा कोई काम नहीं चलता है। शाहजी ने लिखा है कि उसका बेटा उससे बागी हो गया है। उसकी कोई इज्जत नहीं करता और न ही उसका कहना मानता है। शाहजी ने उस बागी से निपटने की हमें पूरी छूट दे दी है। अब सवाल फिर वहीं है कि क्या करें?''

एक के बाद एक सरदार सुझाव देने खड़ा होता रहा। गर्मागर्म भाषण हुए और न जाने यह क्रम कब तक चलता कि अचानक बिजली कौंधी।

हाँ, बड़ी साहिबा गरज उठीं– ''बस, बस, ये बकवास बन्द करो। बहुत हो चुका। तुम सब कागजी शेर बन दरबार में दहाड़ते हो और मतलब की एक बात नहीं करते। सीधे–सीधे यह बताओ तुममें से कौन है जो शिवाजी के बच्चे को पकड़ कर यहाँ दरबार में पेश कर सकता है। जिसमें हिम्मत हो वह आये आगे और....''

इसी बीच एक दासी सोने का एक सजा थाल जिसमें चांदी का वर्क लगा पान का बीड़ा रखा था, चौकी पर रख कर चली गई।

जैसे सबको लकवा मार गया हो। एक दूसरे की तरफ देखने लगे फिर नीचे गर्दन कर खड़े रहे।

बड़ी साहिबा ने एक तरफ से नजर घुमाई और सबको घूरती चली गई। बीजापुर दरबार के सभी शेर तो वहाँ मुँह लटकाए खड़े थे– अफजल खाँ, मूसेखाँ, हसन पठान, हिलाल, घोरपड़े, घाटगे, मम्बाजी भोंसले आदि सब मौजूद थे।

बड़ी साहिबा नागिन सी फुफकार उठीं– ''तुम सब हिजड़े इकट्ठे हो गए हो। कोई भी मर्द यहाँ बाकी नहीं है। क्यों खड़े हो यहाँ–''

''मैं खुद को इस काम के लिए पेश करता हूँ बड़ी साहिबा।''

सारे दरबार की नजर उधर को मुड़ गई जिधर से आवाज आई थी। अफजल खाँ अन्य सरदारों की पंक्ति से निकलकर दो कदम आगे आ पहुँचा और पान का बीड़ा उठा कर उसने चबा लिया।

अपना हाथ ऊंचा उठाकर उसने बड़े घमंड से घोषणा की– ''बड़ी साहिबा, मैं उस चूहे को जिन्दा पकड़ कर आपके सामने पेश करने की कसम खाता हूँ।''

अली अदिलशा ह के चेहरे पर खुशी दौड़ गई परन्तु बड़ी साहिबा पहले की तरह ही गम्भीर होकर बोलीं–''हम तुम्हारी बहादुरी के कायल हैं खान! लेकिन शिवाजी बड़ा मक्कार है। उससे निपटने के लिए फौजी ताकत के साथ–साथ चालाकी के दांव पेंच भी लड़ाने पड़ेंगे।''

''बड़ी साहिबा मैं कोई आटे का नहीं बना हूं। सैकड़ों लड़ाइयाँ मेरी हिम्मत की जिन्दा मिसालें हैं। आप बेफिक्र रहें। और उस दिन की बाट देखें जब मैं उस काफिर का हाथ पैरों में बेड़ियां डालकर इस दरबार के सामने पेश करूंगा।''

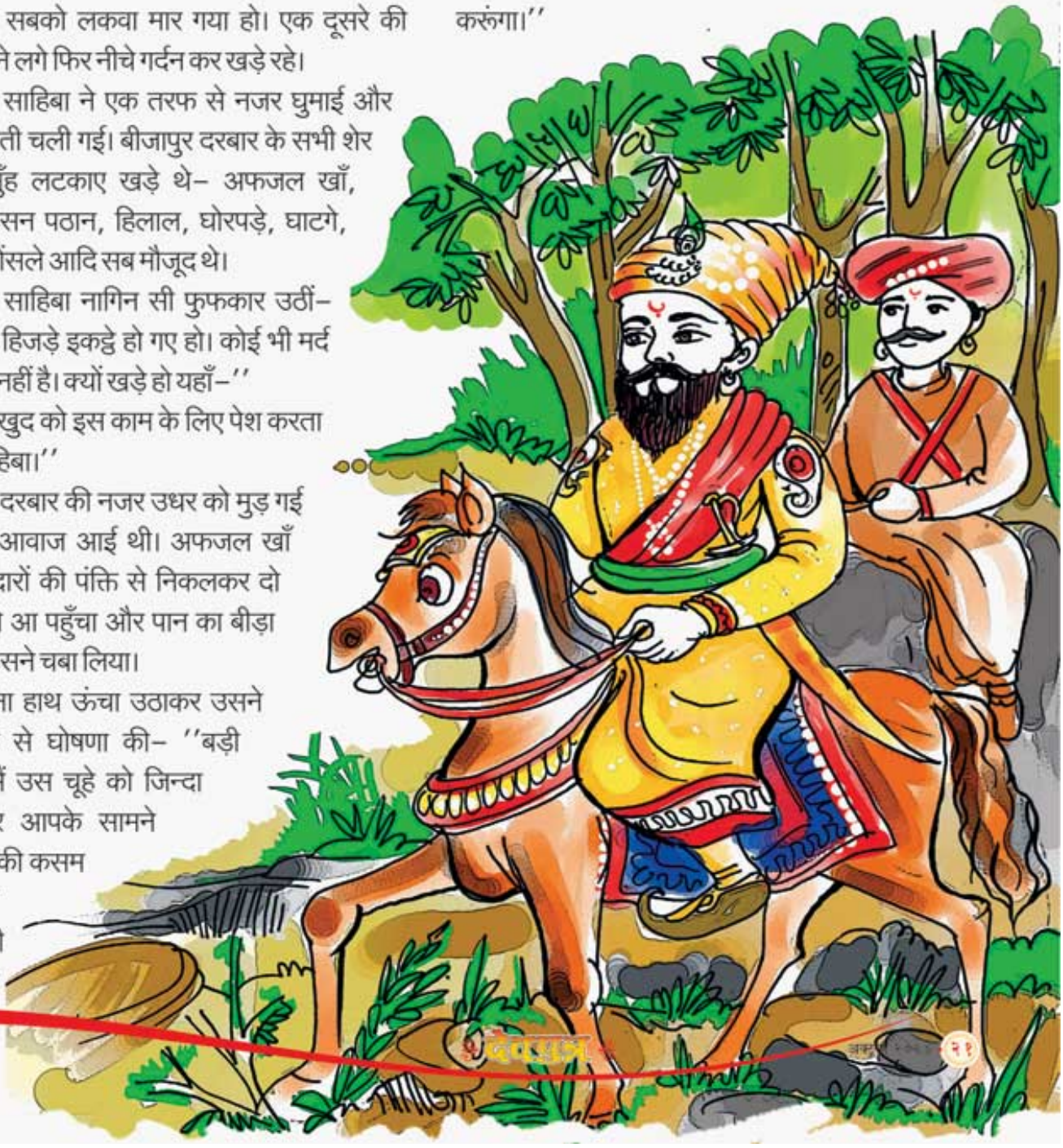

''हमें तुम्हारी बातों पर पूरा–पूरा यकीन है। आखिर जब तुम उसके बाप को मुश्क लगाकर दरबार में ला सकते हो, तो उसके बेटे की नाक में भी नकेल डाल सकते हो। हम खुदा से तुम्हारी कामयाबी की दुआ मांगते हैं।'' कहती हुई बड़ी साहिबा खड़ी हुई और शाही अंदाज से जनानेखाने की तरफ चली गईं।

अली आदिलशाह ने उठकर हीरों की मूठ वाली एक छुरी देते हुए कहा– ''खान, यह आपको हमारी तरफ से तोहफा है। हमें उम्मीद है कि आप आदिलशाही के इस कांटे को हमेशा के लिए निकाल फेंकेगे।''

सारा दरबार अफजलखाँ की जय जयकारों से गूंज उठा। किसी ने उसे शेर कह कर पुकारा तो किसी ने कुछ और।

दरबार उठने से पूर्व खुद अली आदिलशाह ने उसे महान बुतशिकन और कुफ्रशिकन कहकर गले लगाया और विदा किया।

अगले ही दिन से नगर के बाहर मीलों लम्बे–लम्बे मैदान में तम्बू लगने शुरु हो गए। अलग–अलग दिशाओं से सेनाएँ आकर इकट्ठी होना शुरु हुईं।

देखते ही देखते तम्बुओं और शामियानों का नगर खड़ा हो गया। लड़ाई के बिगुल बजने लगे। सैनिकों की टुकड़ियां लड़ाई का अभ्यास करने लगीं। जिधर देखो उधर ही हिनहिनाते घोड़े दौड़ लगाते नजर आते या सूंड उठाकर चिंघाड़ते हाथी।

आखिर, ज्योतिषियों द्वारा बताए गए शुभ दिन यह सेनाओं का काफिला कूच के लिए तैयार हुआ। सब सरदार अपनी अपनी टुकड़ियों के आगे सजे हुए घोड़ों पर सवार हो गए।

अफजल खाँ का हाथी सबसे आगे चलता था। कई दिन से उसके माथे और सूंड पर मेंहदी रचाई जा रही थी। कीमती हौदा तैयार कराया गया था।

खान अपने शामियाने से निकल बाहर आया। असंख्य सैनिकों को देखकर वह फूल कर कुप्पा हुआ जा रहा था। सैनिकों के बीच के निकलता हुआ कोई एक फर्लांग ही चला होगा कि उसके हाथी का महावत घबराया हुआ आया और माथे से पसीना पोंछते हुए बोला– ''सरकार, न जाने कौन बला जादू कर गई। आपका प्यारा हाथी फतेह लश्कर खड़ा–खड़ा धड़ाम से जमीन पर जा गिरा और देखते ही देखते दम तोड़ गया है।''

खान दोनों हाथ आसमान की तरफ किए खड़ा रह गया। वह इस अशुभ लक्षण के लिए बिलकुल तैयार नहीं था।

उसने किसी तरह अपने को संभाला। आखिर तो वह सेना का सिपहसालार था। बाकी सरदार और सिपाही क्या कहेंगे?

यही सोचकर उसने हुक्म दिया–''तो फिर नालायक, हमारा मुंह क्या ताक रहा है। जाओ कोई दूसरा हाथी तैयार करो और जल्दी लेकर आओ।''

एक बार जोर से नारा लगा–''अल्लाह हो अकबर।''

दूसरा नारा लगा–''कुफ्रशिकन अफजल खान जिन्दाबाद।''

मानों समुद्र की तूफानी लहरें आगे ही आगे बढ़ चलीं।

सारा आकाश धूल से आच्छादित हो गया और अगला पड़ाव आते ही धरती खून से लाल होनी शुरु हो गई। जिस भी गांव के बाहर डेरे डाले जाते, वहीं खान मृत्यु का नग्न नर्तन कराता।

मंदिरों के कलश उठवाकर नदियों में फिकवाये जाने लगे, मूर्तियाँ तोड़–तोड़ कर मस्जिदों की पैड़ियों की नीवों में झोंक दी गई। यह क्रम अनवरत चलता रहा और अफजल खाँ का काफिला भी आगे ही बढ़ता रहा। धीरे–धीरे पाप का यह घड़ा भी भरता गया। परन्तु इस घड़े को पूरी तरह भरने में शायद अभी थोड़ी देर और लगनी थी। ठीक उतनी ही देर इसके फूटने में भी थी।

(शेष अगले अंक में।)

*** बुत शिकन = मूर्ति भंजक (मूर्तियाँ तोड़ने वाला)**

चित्र पहेली • राजेश गुजर

बच्चों, हम पांच दिन का दीपावली पर्व मनाते हैं। इस पहेली में ऐसी ही १२ वस्तुएँ एवं शुभ प्रतीक है, जिनका उपयोग करते हैं। ये १२ वस्तुएँ इन टुकड़ों में हैं। आप सही टुकड़ों को जोड़कर १२ वस्तुएँ पूर्ण करें।

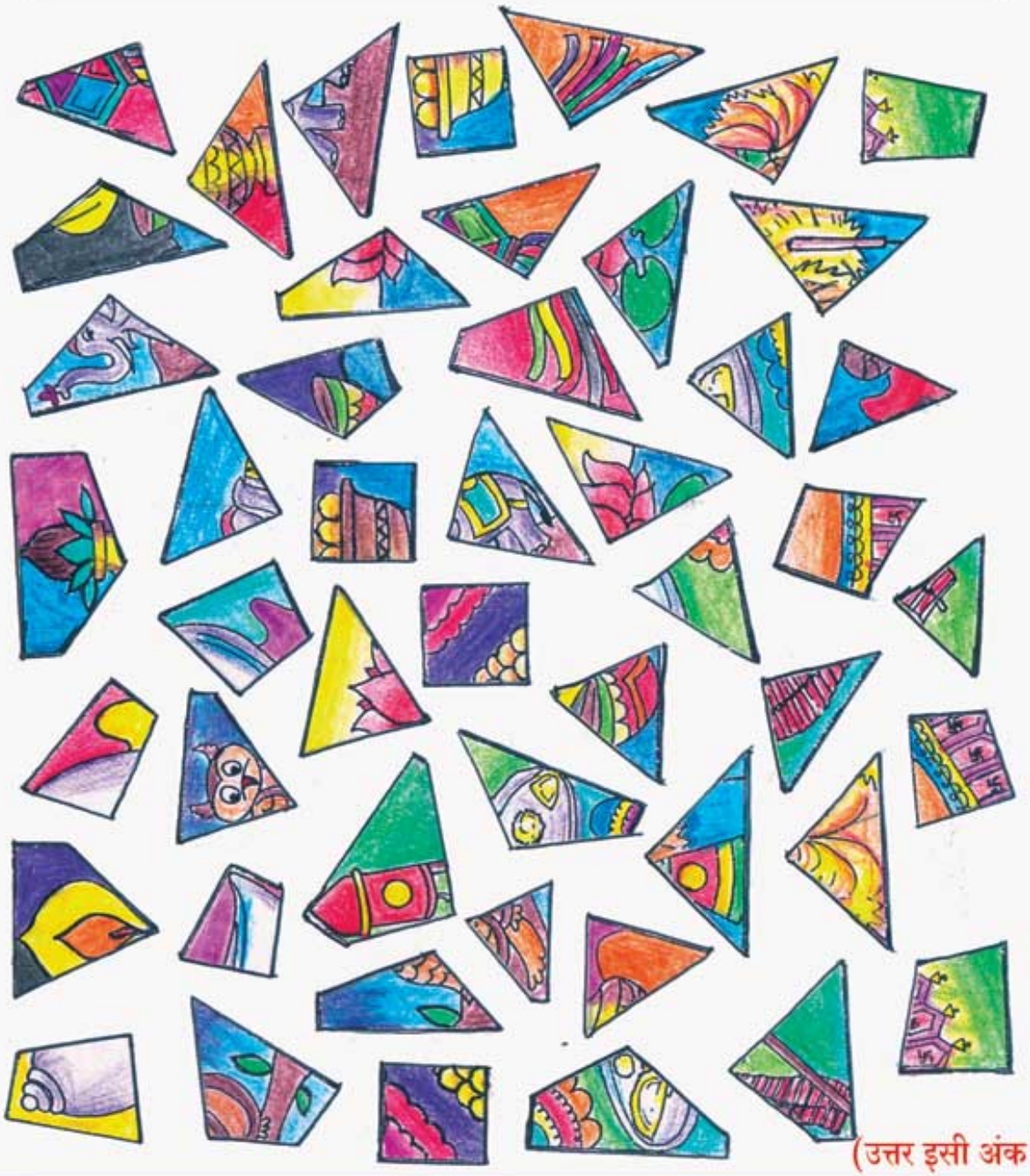

(उत्तर इसी अंक में)

सफाई मण्डली

कहानी : कुसुम अग्रवाल

जब से दीपावली की छुट्टियाँ हुई हैं ऊब गया हूं। मन ही नहीं लगता। ऐसा लगता है जैसे बिलकुल निकम्मा हो गया हूं। करूं तो क्या करूं? मनीष बड़बड़ाता हुआ इधर से उधर घूम रहा था कि माँ ने आवाज दी।

''अभी आया माँ!'' कहकर मनीष माँ के पास गया जो कि रसोईघर में थी।

''कहिए माँ! क्या काम हैं?'' मनीष ने पूछा।

''बेटा! अब तुम्हारी छुट्टियाँ हो गई हैं। अब तुम्हें घर के काम में मेरी थोड़ी मदद करनी चाहिए।''

''हाँ माँ! जरूर करूंगा। मैं तो खुद ही कुछ करना चाहता हूँ। बताइए क्या करूं?''

''यह देखो, मैंने घर का सारा कूड़ा–करकट एक थैली में भर कर रखा है। तुम जाकर इसे फेंक आओ।''

मनीष ने देखा माँ ने सब्जियों के छिलके, व्यर्थ कागज के टुकड़े, टूटा–फूटा प्लास्टिक का सामान आदि सारा कचरा एक ही थैली में भर रखा था।

यह देखकर मनीष बोला– ''यह क्या माँ! मैंने बताया था ना कि इस तरह हर प्रकार का कूड़ा–करकट एक साथ नहीं भरते। उन्हें छांटकर अलग–अलग थैलियों में भरना चाहिए था।''

''बेटा! घर में

और कई काम भी तो रहते हैं। उसी चक्कर में सब भूल जाती हूं। आज तो फेंक आओ। मैं आगे से ध्यान रखूंगी।''

मनीष ने कचरे की थैली हाथ में पकड़ी और बोला ''मगर कचरा फेंकना कहाँ पर है? कचरा पात्र कहाँ है?''

''बेटा! हमारे मोहल्ले में कचरा पात्र नहीं है इसलिए मोहल्ले वाले सामने के खाली मैदान में ही कचरा फेंकते हैं तुम भी ये कचरा उसी मैदान में फेंक आओ।''

आठवीं कक्षा में विद्यार्थी मनीष को माँ की यह बात नागवार गुजरी। उसने अपनी पाठ्यपुस्तकों में पढ़ा था कि हमें कूड़ा–करकट उचित स्थान पर ही फेंकना चाहिए। इधर–उधर कूड़ा–करकट फेंकने से गंदगी तो फैलती ही है तथा कई तरह की बीमारियों को भी बढ़ावा मिलता है। उससे यह भी पढ़ा था कि नगर में सफाई की व्यवस्था रखना नगर पालिका की जिम्मेदारी है और इसके लिए उसे स्थान–स्थान पर कचरा पात्र लगवाने चाहिए।

फिर हमारे मोहल्ले में कचरा पात्र क्यों नहीं है? हो सकता है नगर पालिका का ध्यान हमारे मोहल्ले की ओर गया ही नहीं हो। जब पूरे देश में स्वच्छता अभियान जोर शोर से चल रहा हो, हमारा मोहल्ला गंदा रहे यह ठीक नहीं।

पर मरता क्या न करता मजबूर था इसलिए वह कचरा फेंकने मैदान की ओर चल दिया। उस मैदान में पहले से ही कचरे का एक बड़ा ढेर था। उसी में एक दो गायें भी खड़ी थीं और वह उसी कचरे के ढेर में मुंह मार रही थीं।

बेचारी गायें, सब्जियों के छिलके आदि खाद्य सामग्री खाने के चक्कर में प्लास्टिक की थैलियां भी चबा रहीं है। ऐसे तो ये बीमार हो जाएगीं और फिर ये मर भी सकती हैं– मनीष सोच ही रहा था कि सामने से उसे विकास आता दिखाई दिया।

वह भी उसी मैदान में कचरा फेंकने आया था। मनीष ने विकास को कहा ''क्या इस तरह हमारा यहां कचरा फेंकना गलत नहीं है? क्या हमें इस कचरे के ढेर को यहाँ से हटाना नहीं चाहिए?''

विकास ने कहा ''है तो सरासर गलत। पर हम इसे यहाँ से कैसे हटा सकते हैं?''

''क्यों न हम एक पत्र लिखकर नगर पलिका के अध्यक्ष तक पहुंचा दें? वह हमारी इस समस्या का अवश्य ही कोई हल निकालेंगे।'' मनीष ने कहा।

विकास ने कहा ''बात तो तुम्हारी ठीक है। ऐसा हो भी जाएगा परन्तु तुम तो जानते हो कि ऐसी कार्यवाही होने में थोड़ा समय तो लगता ही है। तब तक क्या ये सब ऐसे ही चलता रहेगा?''

विकास की बात सुनकर मनीष ने कहा– ''नहीं, यदि ऐसा ही चलता रहा तो हम शीघ्र ही कई नई समस्याओं की चपेट में आ जाएंगे जैसे– मक्खी, मच्छर व अन्य कीटाणु तथा वायु प्रदूषण आदि। सुनो!'' मेरे दिमाग में इस समस्या निवारण का एक तत्कालीन उपाय आया है।''

''वह क्या?''

''जब तक हमारे मोहल्ले में कचरा पात्र नहीं लग जाता क्यों न हम बच्चे मिलकर इस समस्या को सुलझा दें।''

''वह कैसे?''

''हम सब बच्चे मिलकर एक मण्डली बनाएंगे जिसका नाम होगा– सफाई वाले बच्चे। अभी हम सब बच्चों की छुट्टियाँ भी हैं इसलिए हम सब यह काम आसानी से कर सकते हैं। हम सभी घरों से कचरा इकट्ठा करेंगे तथा फिर उसे एक गड्ढे में डाल कर जला देंगे।''

''उपाय तो अच्छा है, मगर यह काम इतना आसान नहीं है। हो सकता है हमारे घर वाले हमें यह काम करने ही ना दें और मुझे लगता है कि वह हमारी कचरा यहां नहीं फेंकने की बात भी इतनी आसानी से नहीं मानेंगे।''

मनीष ने कहा–''उसका भी उपाय है मेरे पास।'' कहकर वह मन ही मन मुस्कुराया और विकास को अपने पीछे आने की कह कर अपने घर की ओर चल दिया।

अगले दिन सुबह सब ने देखा कि उस कचरे वाले खाली मैदान के पास वाली दीवार पर एक पोस्टर चिकपा हुआ था जिस पर लिखा था–

सावधान! नगर पलिका–अध्यक्ष का आदेश है कि आज के बाद कोई इस मैदान में कचरा नहीं डालेगा। यदि कोई दोषी पाया गया तो उसे ५००रु. जुर्माना भरना होगा और उसके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही भी की

जाएगी।

पोस्टर देखकर पूरा मोहल्ला सकते में था कि अब क्या करें? बहुत से मोहल्लेवासी कचरे से भरी थैलियां लेकर उस मैदान में फेंकने आए परंतु वह पोस्टर देख कर उलटे पांव लौट गए।

अब कचरा कहाँ फेकेंगे, अभी वे यह सोच ही रहे थे कि एकाएक पूरे मोहल्ले में टनाटन घंटिया बज उठीं। कई साइकिल सवार मुंह पर कपड़ा बांधे मोहल्ले भर में घूमने लगे। वे घर–घर जाकर आवाज लगा रहे थे–''सफाई मण्डली आई है, कचरा दे दो।'' मोहल्ले वाले पोस्टर देखकर यह तो समझ ही गए थे कि अब खाली मैदान में कचरा फेंकना खतरे से खाली नहीं है इसलिए उन्होंने अपने–अपने घरों का कचरा उन साइकिल सवारों को देने में ही अपनी गनीमत समझी। हालांकि वे कौन हैं, यह पहचानना उनके लिए मुश्किल था क्योंकि वे सब मुंह पर कपड़ा बांधे हुए थे।

कई दिनों तक ऐसा ही चलता रहा। रोज साइकिल सवार मोहल्ले में आ जाते और कचरा इकट्ठा करके ले जाते। इसी बीच में मैदान का कचरा भी सूख गया था और एक दिन बच्चों ने चुपचाप उस कचरे को भी जला दिया। अब मोहल्ला साफ सुथरा लगने लगा था।

एक सुबह जब मनीष इसी काम के लिए अपनी साइकिल लेकर जा रहा था कि उसकी माँ ने पूछा ''आजकल रोज सुबह सुबह साइकिल लेकर कहां जाते हो?''

माँ की बात सुनकर मनीष हंसने लगा और बोला– कहीं नहीं मैं बस यू हीं। समझ लो अपने ही काम से।

दिन यूं ही बीत रहे थे कि एक दिन मनीष और उसे साथियों ने देखा कि उनके मोहल्ले में नगर पालिका अध्यक्ष आए हैं। नगर पालिका अध्यक्ष ने पूछा–''क्या यहीं मीरा नगर है। हमें यहां से एक पत्र मिला था कि यहाँ सफाई की व्यवस्था ठीक नहीं है परंतु यह मोहल्ला तो बहुत ही साफ सुथरा लग रहा है। लगता है इन्हें हमारी व्यवस्था की जरूरत नहीं।''

''नहीं महोदय! जरूरत है। वरना जब हमारी छुट्टियां समाप्त होंगी, यह मोहल्ला फिर से गंदा हो जाएगा। फिर बच्चों ने सारी बात अध्यक्ष महोदय को बताई किस तरह से वे सफाई वाले बच्चे बनकर सारा कूड़ा–करकट इकट्ठा करके एक स्थान पर ले जाकर जला देते हैं।'' उन्होंने अध्यक्ष महोदय को ये भी कहा ''माफ करिए। हमें यह काम करने के लिए आपके नाम का सहारा भी लेना पड़ा'' फिर उन्हें वह पोस्टर जो मोहल्ले वालों को डराने के लिए उन्हें लगाना पड़ा था, दिखाया।

सारी बात सुनकर अध्यक्ष महोदय मुस्कुराए भी और मन ही मन शर्मिंदा भी हुए कि नगर पालिका की जरा–सी लापरवाही की वजह से बच्चों को कितना कार्य भार उठाना पड़ा था। उन्होंने बच्चों से कहा ''माना कि ऐसे पोस्टर लगाना गलत है पर इसमें गलती हमारी भी है। काश! कि हमने समय पर अपने काम पर ध्यान दिया होता तो तुम्हें यह झूठा पोस्टर नहीं लगाना पड़ता।''

उन्होंने अगले ही दिन मीरा नगर में कचरा पात्र रखवा दिया तथा समय –समय पर उसकी सफाई का निर्देश भी दे दिया।

अब तक मोहल्ले वाले भी सारी बात समझ चुके थे। वे बोले– कई बार बच्चे हम बड़ों से ज्यादा समझदार और जागरुक होते हैं और क्यों न हो वही तो भारत के भावी नागरिक हैं। आज इन बच्चों ने हमारी आँखें खोल दी हैं क्योंकि इस मामले में हम सब भी उतने ही दोषी हैं जितनी नगर पालिका। हम चाहते तो जो काम बच्चों ने कर दिखाया है हम बड़े भी कर सकते थे परन्तु अपनी सुविधा और आलस की वजह से हमने यह नहीं किया। बस आँख मींचे खाली मैदान में कचरा फेंकते रहे।

इस पर मनीष बोला– कोई बात नहीं, हम सब समय पर संभल गए यहीं सबसे अच्छी बात है और यदि आप लोग अनुमति दे तो हमारी सफाई मण्डली अगली छुट्टियों में अपना यह अभियान फिर जारी रखना चाहेगा ताकि अन्य मोहल्लों में भी सफाई की अलख जगाई जा सके।

हमें मंजूर है– सब एक साथ बोले– फिर पूरे मोहल्ले में यह नारा गूंज उठा– सफाई मण्डली जिंदाबाद।

● कांकरोली (राज.)

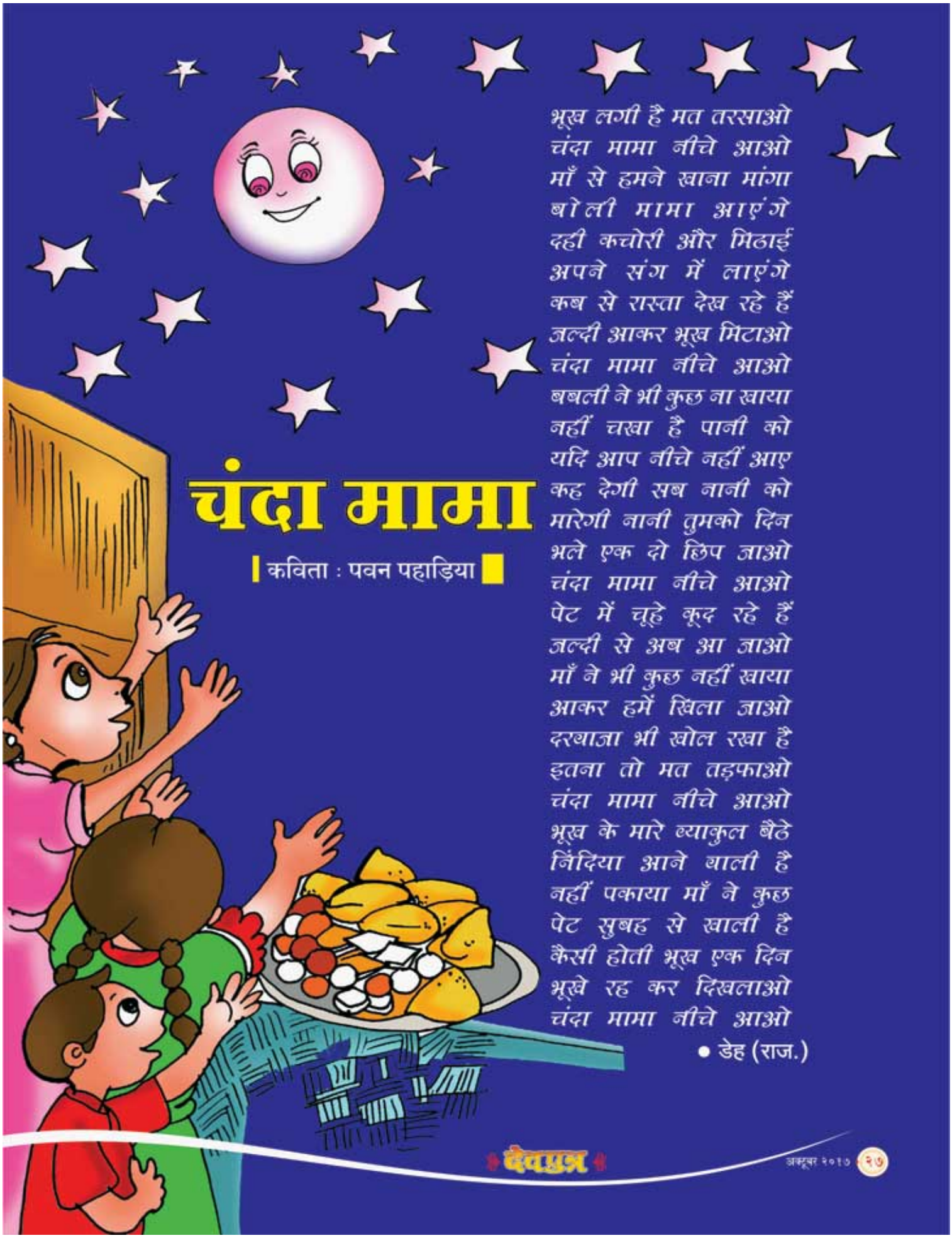

चंदा मामा

कविता : पवन पहाड़िया

भूख लगी है मत तरसाओ
चंदा मामा नीचे आओ
माँ से हमने खाना मांगा
बोली मामा आएंगे
दही कचोरी और मिठाई
अपने संग में लाएंगे
कब से रास्ता देख रहे हैं
जल्दी आकर भूख मिटाओ
चंदा मामा नीचे आओ
बबली ने भी कुछ ना खाया
नहीं चखा है पानी को
यदि आप नीचे नहीं आए
कह देगी सब नानी को
मारेगी नानी तुमको दिन
भले एक दो छिप जाओ
चंदा मामा नीचे आओ
पेट में चूहे कूद रहे हैं
जल्दी से अब आ जाओ
माँ ने भी कुछ नहीं खाया
आकर हमें खिला जाओ
दरवाजा भी खोल रखा है
इतना तो मत तड़फाओ
चंदा मामा नीचे आओ
भूख के मारे व्याकुल बैठे
निंदिया आने वाली है
नहीं पकाया माँ ने कुछ
पेट सुबह से खाली है
कैसी होती भूख एक दिन
भूखे रह कर दिखलाओ
चंदा मामा नीचे आओ

• डेह (राज.)

।। स्वामी दयानंद निर्वाण दिवसः दीपावली ।।

गाली के बदले पुष्प

प्रेरक प्रसंग : डॉ. श्याममनोहर व्यास

एक बार महर्षि दयानंद सरस्वती फर्रूखाबाद में गंगातट पर ठहरे हुए थे। उनसे थोड़ी ही दूर एक और झोपड़ी में एक दूसरे संत भी ठहरे हुए थे। प्रतिदिन वह दयानंद की कुटिया के पास आकर उन्हें गॉलियां देते रहते। दयानंद सुनते और मुस्कुरा देते। कोई भी उत्तर नहीं देते थे।

एक दिन किसी सज्जन ने फलों का एक बहुत बड़ा टोकरा महर्षि के पास भेजा। महर्षि ने टोकरे से बहुत अच्छे–अच्छे फल निकाले, उन्हें एक वस्त्र में बाँधा और अपने शिष्य से बोले– ''ये फल उस महात्मा को दे आओ, जो उस सामने की कुटिया में रहते हैं।''

शिष्य फल लेकर उस महात्मा के पास पहुँचा और बोला– ''बाबा, ये फल स्वामी दयानंद जी ने आपके लिए भेजे हैं।''

साधु ने दयानंद का नाम सुनते ही कहा– ''अरे, यह प्रातःकाल किसका नाम ले लिया। तुम्हें पता नहीं आज भोजन भी मिलेगा या नहीं। चला जा यहाँ से। मेरे लिए नहीं, किसी दूसरे के लिए भेजे होंगे ये फल। मैं तो प्रतिदिन उन्हें गालियाँ देता हूँ।''

उस शिष्य ने महर्षि के पास आकर यही बात कही। महर्षि दयानंद बोले– ''नहीं, तुम फिर उनके पास जाओ। उनसे कहो कि आप प्रतिदिन जो अमृत वर्षा करते हो, उसमें आपकी पर्याप्त शक्ति बने रहे और आपकी अमृत वर्षा में कमी न आ जाए।''

यह संदेश सुनकर साधु बहुत लज्जित हुआ और आकर महर्षि के चरणों में गिर पड़े तथा उनसे क्षमा मांगने लगे।

● उदयपुर (राज.)

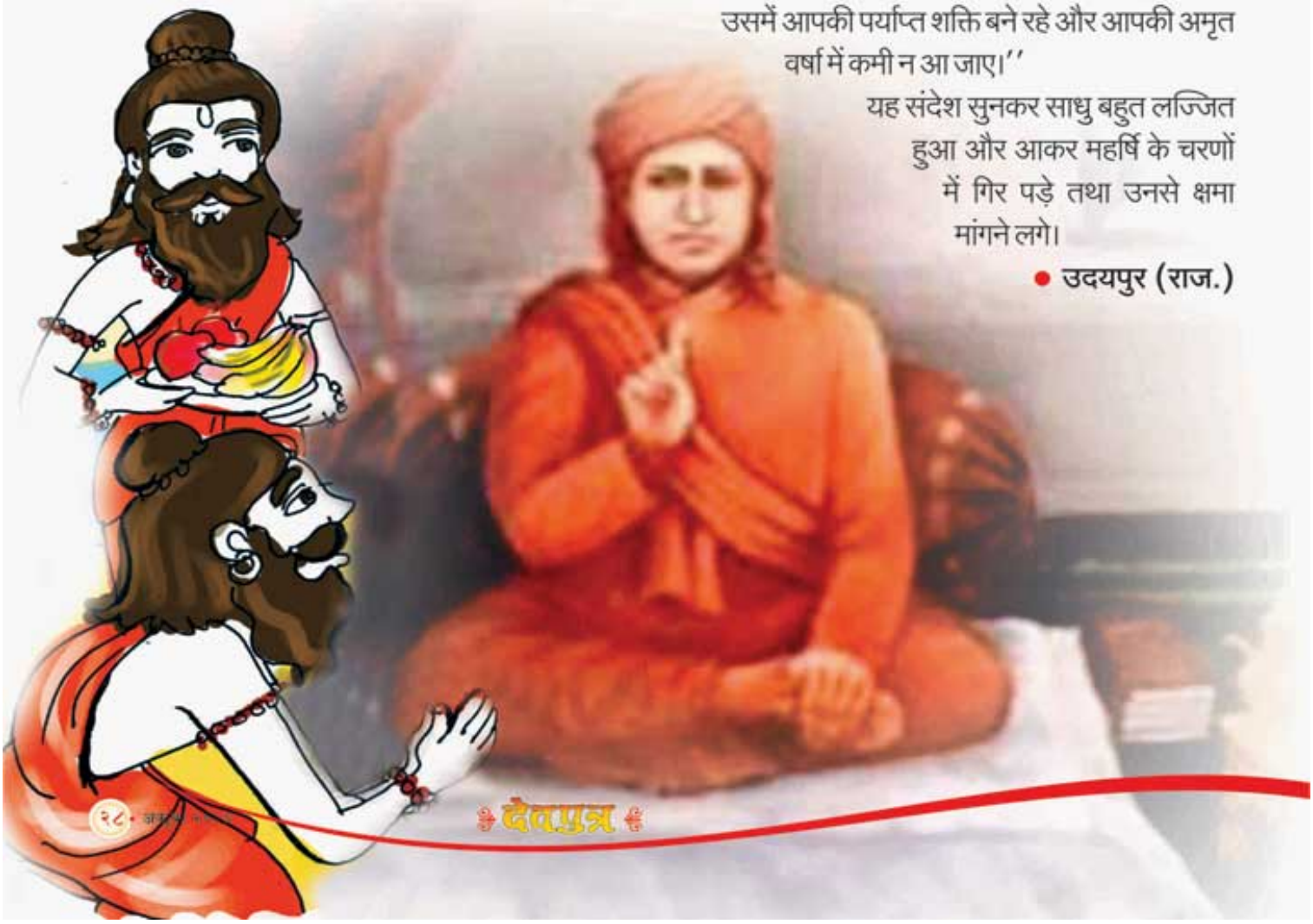

।। स्वामी रामतीर्थ जन्म एवं बलिदान दिवसः दीपावली।।

रामतीर्थ ने सीखी संस्कृत

प्रसंग : साँवलाराम नामा

मानव जब जोर लगाता है, पत्थर भी पानी हो जाते हैं।
खमठोक ठेलता जब नर है, पर्वत के पांव उखड़ जाते हैं।
– रामधारी सिंह दिनकर

''तुम्हें शर्म आनी चाहिए कि तुम्हारा अधिकार संस्कृत पढ़ने–लिखने का होना चाहिए, जबकि फारसी में सिर मार रहे हो। अरे! तुम्हें तो संस्कृत देववाणी का पंडित अधिष्ठाता विद्वान होना चाहिए?''

उसके सहपाठी ने उसे लताड़ा। लाहौर कॉलेज के स्नातक छात्र को अपने ही सहपाठी की यह बात भीतर तक तीर सी चुभ गयी, काटो तो खून नहीं।

उसने उसी क्षण प्रण किया कि वह संस्कृत भाषा की शिक्षा अवश्यमेव प्राप्त करके रहेगा। अगले दिन वह संस्कृत के बड़े शिक्षक के पास पहुँचा उनसे अपनी आंतरिक भावना इस प्रकार प्रकट की– ''महोदय जी! मैं संस्कृत सीखकर उसकी परीक्षा देना चाहता हूँ। संस्कृत शिक्षक उसकी बात सुनकर पहले तो हँसे और फिर कुछ बदले लहजे में बोले–''बेटे! जब तुम्हें संस्कृत भाषा का रत्तीभर भी ज्ञान नहीं है, तब भला तुम, स्नातक में संस्कृत की परीक्षा के लिए आवेदन पत्र कैसे भर सकते हो?'' यह सुनने के उपरांत भी वह छात्र निराश, हताश नहीं हुआ, बल्कि दूनी आशा, उत्साह, उमंग से मन ही मन में पक्का ठान लिया कि संस्कृत भाषा तो अब सीखकर ही रहेगा। मानो उसके नाचने के लिए घुंघरू पांव में बँध गए।

अब वह वहाँ से सीधा अपने पिता के पास गया, जो संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पंडित, प्रतिष्ठित विद्वान थे और उनसे संस्कृत सिखाने की साग्रह प्रार्थना की। पिता ने उसके हृदय कमल की पवित्र भावना और आग्रह को सहर्ष संस्कृत सिखाने की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार संस्कृत सीखने की धुन के कारण छात्रों, शिक्षकों, और पिताजी के पूरा सम्पर्क में रहकर परिश्रमपूर्वक अध्ययनरत हो गया।

लगभग तीन–चार मास पश्चात् वह पुनः संस्कृत के शिक्षक के समीप पहुँचा और परीक्षा देने के संबंध में प्रार्थना की। तब शिक्षक ने उसकी परीक्षा ली और वह परीक्षा में सफल रहा धुन का धनी, प्रण का पक्का, मेहनत में माहिर, लक्ष्य प्राप्ति की पूर्ण निष्ठा, अपने कलंक को धोने वाला वह छात्र तीर्थराम जो अपनी विद्वता, देशभक्ति के कारण स्वामी रामतीर्थ के नाम से विख्यात हुआ। अत्यंत हर्ष की बात है कि उस वर्ष स्नातक परीक्षा में विश्वविद्यालय में उसने शीर्षस्थ स्थान अर्जित किया था।

● **भीनमाल (राज.)**

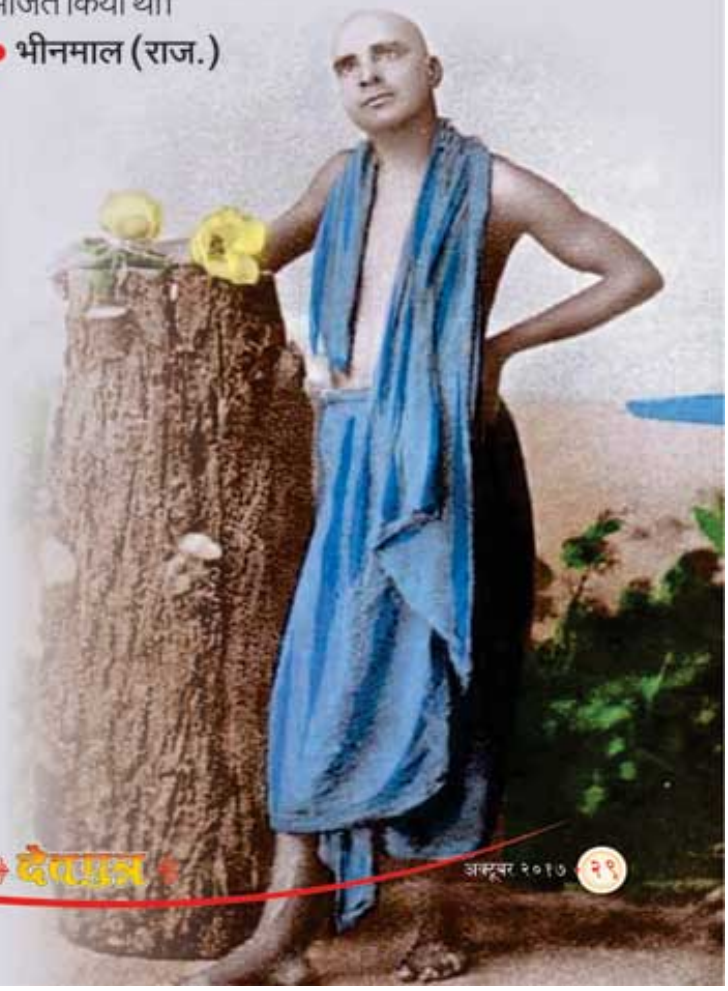

दादाजी का चश्मा

अनुवाद : शिवचरण मंत्री

अभी–अभी दादाजी को कम दिखाई देने लगा था। मंदिर जाने को भी श्रवण को ले जाना पड़ता था। दादाजी को बूढ़ों के चबूतरे पर लाने–ले जाने भी श्रवण को ही ले जाना पड़ता था। दादाजी को पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक था पर अक्षर मानों चींटियाँ चल रहे से लगते थे। अखबार जब बहुत ही पास में लाया जाता तो भी शीर्षक ही हलके हलके दिखाई देते थे। अतः घर के सभी लोगों को दादाजी की आँखों की चिंता सताने लगी।

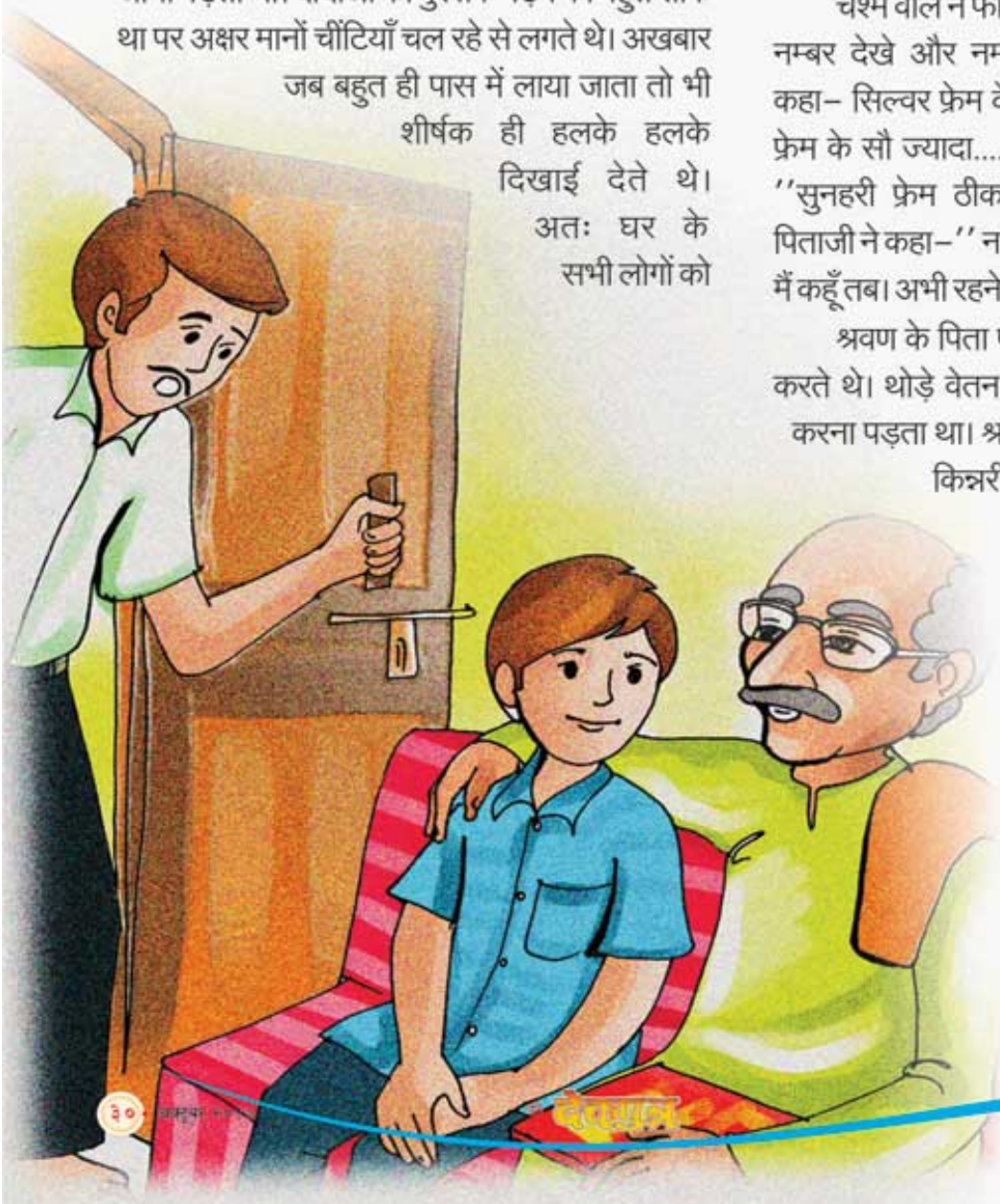

डाक्टर ने दादा की आँखों की चिंता करके कहा– ''नम्बर आए हैं। बाईं आँख के चार और दाहिनी आँख के पाँच नम्बर हैं। आँखों का परदा घिस गया है। चश्मा लगवाना ही होगा।''

पर्ची देखकर श्रवण ने कहा– ''चलो पिताजी! चश्में वाले की दुकान से चश्मा ले लें।''

अस्पताल के सामने ही चश्मे वाली दो दुकानें थी। पहली दुकान में दो सीढ़ियाँ लांघ कर बैंच पर बैठकर चश्में वाले दुकानदार के सामने फाईल रखी और पिताजी ने कहा– ''इन दादा का चश्मा बनवाना है।''

चश्में वाले ने फाईल ली। पर्ची पढ़ी, अलमारी में रखे नम्बर देखे और नम्बर लिखकर फाईल लौटाते हुए कहा– सिल्वर फ्रेम के पाँच सौ रूपए होंगे और सुनहरी फ्रेम के सौ ज्यादा.....'' श्रवण ने बात काटकर कहा– ''सुनहरी फ्रेम ठीक रहेगा।'' इसी समय श्रवण के पिताजी ने कहा–'' नहीं नहीं, अभी नहीं फिर बाद, मैं जब मैं कहूँ तब। अभी रहने दो। अभी पैसे की थोड़ी तंगी है।''

श्रवण के पिता एक पुस्तक प्रकाशक के यहाँ काम करते थे। थोड़े वेतन में पाँच प्राणियों का पालन पोषण करना पड़ता था। श्रवण जहाँ सातवीं कक्षा में पढ़ता तो किन्नरी पाँचवीं में पढ़ती थी। शुल्क पुस्तकें, कापियाँ, गणवेश आवागमन, ऊपर के खर्चे इस तरह कई खर्चे अलग आते रहते थे।

आज सूचना पट पर एक सूचना लगी हुई थी। आगामी माह की पहली तारीख को विद्यालय का एक दल चार दिन के लिए राजस्थान का भ्रमण करने जाएगा। इसके लिए छः सौ रुपए जमा करनवाने थे। घूमने जाने का

नाम पढ़कर बालकों का मनमयूर नाच उठा।

दोपहर में छुट्टी में सभी मित्र मिले। वे सभी घूमने जाने के लिए नाम लिखवाने वाले थे। श्रवण को मौन देखकर सबने कहा– ''तुम भी नाम लिखवा दो। बड़ा मजा रहेगा।'' श्रवण ने उत्तर दिया ''मैं पिताजी से पूछूंगा।''

प्रार्थना सभा में शिक्षक ने राजस्थान के दर्शनीय स्थलों का बड़ा ही सुन्दर विवरण दिया। गुलाबी नगरी, जयपुर और उसका हवा महल, महाराणा प्रताप का चित्तौड़गढ़ वहाँ का कीर्तिस्तम्भ, चेतक की समाधि स्थल, हल्दीघाटी का रक्त रंजित मैदान, झीलों की नगरी उदयपुर और महाराणाओं के महल उनसे जुड़ी शौर्यगाथाएँ सुनकर बालक रोमांचित हो गए। जैसे भी हो इन अद्‌भुत स्थलों को देखा जाए।

घर आकर श्रवण ने माँ को पर्यटन की बात स्पष्ट की। माँ ने स्पष्ट कह दिया '' अपना भी नाम लिखवा देना पैसों की व्यवस्था मैं कैसे भी कर दूंगी।'' रात को श्रवण ने कहा– ''एक बात करनी है पिताजी!''

''हाँ कहो।''

''हमारी शाला से राजस्थान घूमने का कार्यक्रम बना है।''

''तुझे जाना है?'' पिताजी ने पूछा।

''हाँ। मेरा भी मन हैं। मेरे सभी मित्र जा रहे हैं।''

'' ठीक है तू भी अपना नाम लिखा दे। कितना पैसा देना है?''

''छः सौ रूपए मात्र''

आज ही वेतन मिला था इसलिए पिताजी ने उसे रूपए दे दिए।

अब शाला में केवल प्रवास की ही चर्चा होती थी। प्रार्थना सभा में, कक्षा में, आधी छुट्टी में, खेल के मैदान में सभी जगह मात्र घूमने, घूमने और घूमने जाने की ही बातें होती थी। अन्ततः सूचना पट पर सूचना भी लग गई। एक पूरी बस की व्यवस्था हो गई है अतः अब किसी भी विद्यार्थी का नाम नहीं लिखा जाएगा।

कई बच्चे सूचना पढ़कर निराश होने लगे। प्रवास के लिए नाम लिखवाना चाहते थे पर उनके माता–पिता के पास पैसे नहीं थे। वे दे नहीं सकते थे। इसी तरह कुछ शारीरिक बीमारी के कारण नहीं जा पा रहे थे, परन्तु कुल मिलाकर विद्यार्थियों में असीम उत्साह था।

और पहली तारीख भी आ गई। आज राजस्थान के लिए प्रवास शुरु होने वाला था। बस घंटे भर पहले ही आ गई थी। और वह नौ बजे रवाना होने वाली थी। जाने वाले छात्र एक एक करके आ रहे थे। किसी के साथ माँ आई थी तो किसी को छोड़ने पिताजी तदुपरांत किसी किसी के साथ दोनों ही थे। श्रवण के माता–पिता दोनों ही आए थे। उसी समय यात्रा पर जाने वाले छात्रों की सूची लेकर शाला के व्यायाम शिक्षक आए। उन्होंने कहा– ''मैं जिस विद्यार्थी का नाम लूँ वह बस में बताई सीट पर जाकर बैठे। ''नाम पुकारने से पहले श्रवण ने ''पिताजी! आप यहाँ रुकें मैं अभी आता हूँ। एक मिनिट।'' सारे नाम बोल दिए गए और सूची पूरी हो गई पर सूची में श्रवण का नाम ही नहीं आया। उसके माता–पिता चकित रह गए। उन्होंने कुछ देर उसकी प्रतीक्षा की। उन्होंने सोचा किसी कारण से वह घर चला गया हो और वे इससे आगे नहीं सोच सके। अन्ततः हारथक कर निराश होकर वे घर आए। बाहर से आवाजें देना शुरु किया। ''श्रवण। तू घर आया है या नहीं।''

दादा ने श्रवण के माता–पिता की चीखें सुनी तो वे अपने कमरे से बोले–'' क्यों चीख चिल्ला रहे हो? श्रवण तो यह बैठा है मेरे पास कमरे में।'' माता–पिता दौड़कर दादा के कमरे में पहुँचे। आकर क्या देखा । श्रवण दादाजी के सामने आराम से बैठा है और दादा ने आँखों पर चश्मा पहन रखा है और....''चश्मा!'' श्रवण के पिताजी ने चकित होकर पूछा। श्रवण चुप था। दादा भी चुप ही थे। पर वे श्रवण को देखते ही रहे।

● **अजमेर (राज.)**

(इस कहानी के मूल गुजराती लेखक हैं
श्री सांकलाचंद पटेल, अहमदाबाद, गुजरात)

।। गोवर्द्धन पूजनः २१ अक्टूबर (कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा)।।

छोटे से बड़ा

गोवर्द्धन पूजा के लिए बच्चों ने जुटाई हैं गायों की छोटी बड़ी मूर्तियाँ बताओ कौनसी मूर्ति है किससे बड़ी।

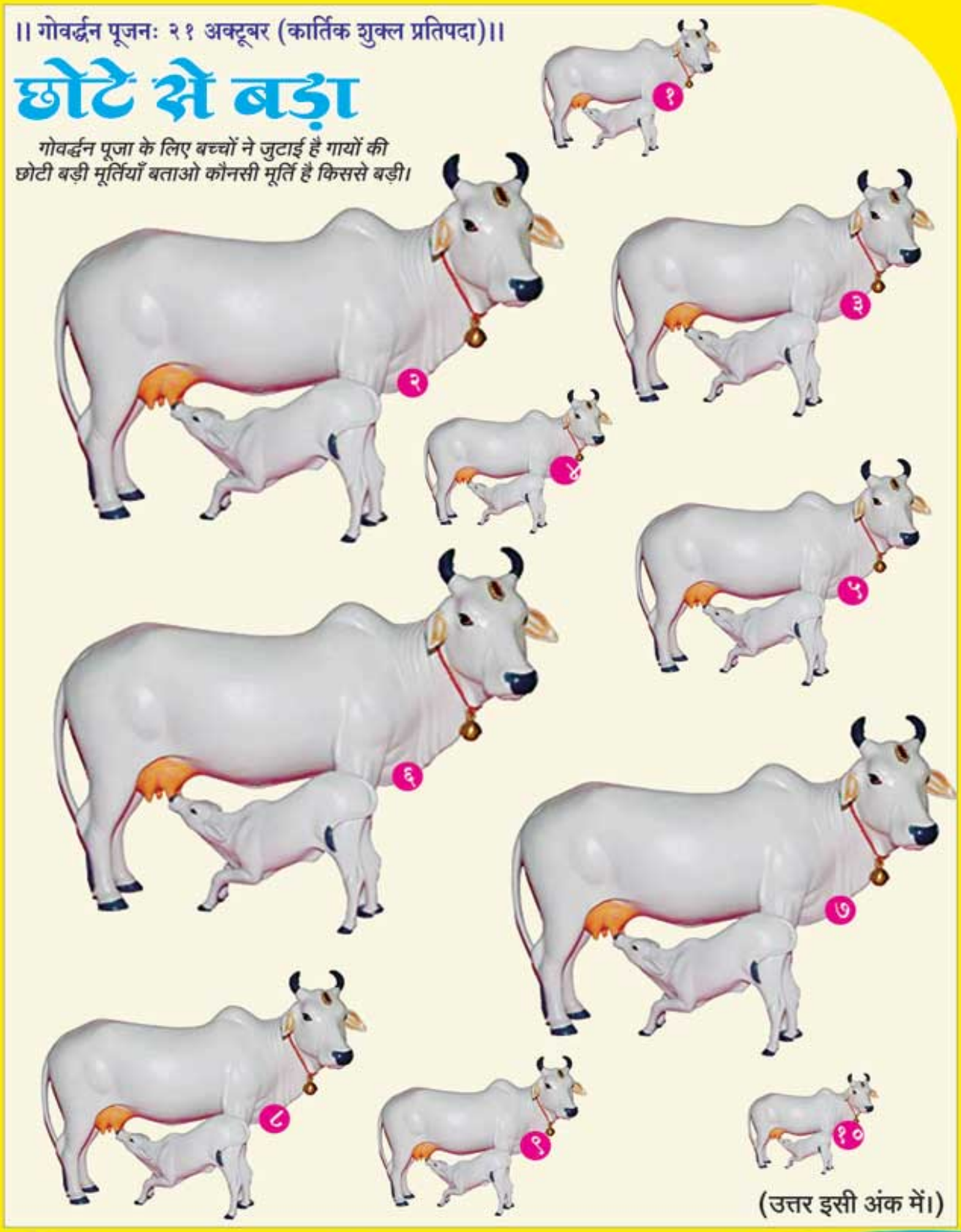

(उत्तर इसी अंक में।)

एक कदम स्वच्छता की ओर

कविता : प्रेमकिशोर पटेल

एक कदम स्वच्छता की ओर।
राष्ट्रपिता गाँधी जी का,
करे साकार वह सपना।
हर परिवेश जहाँ रहे स्वच्छ,
ऐसा भारत हो अपना।
बनकर बापू का अनुयायी,
सदा स्वच्छता पर करें गौर।
आओ, बढ़े चले
एक कदम स्वच्छता की ओर।
खुले शौचमुक्त हर गाँव बनायें,
गंदा पानी, कचरा, निबटाएँ।
साफ सफाई की आदतों की,
बात सदा सबको समझायें।
स्वच्छ रहेंगे, स्वस्थ रहेंगे,
इस अभियान पर डालें जोर।
आओ, बढ़े चले
एक कदम स्वच्छता की ओर।
सुरक्षित, स्थायी, स्वच्छता हेतु,
उपयुक्त तकनीकि अपनाएँ।
ठोस, तरल अपशिष्टों का,
प्रबंधन सुनिश्चित कराएँ।
तब तो स्वस्थ रहेगा जन-जन,
उठेगा फिर खुशियों का हिलोर।
आओ, बढ़े चले
एक कदम स्वच्छता की ओर।
गाँव, शहर, हर गली मोहल्ला,
सुन्दर बनेगा जब स्वर्ग समान।
दुनियाँ भर में भारत का फिर,
होगा अलग से पहचान।
हंसता मुस्कुराता निकलेगा तब,
रोज स्वच्छता लेकर भोर।
आओ, बढ़े चले
एक कदम स्वच्छता की ओर।

● चन्द्रपुर (छ.ग.)

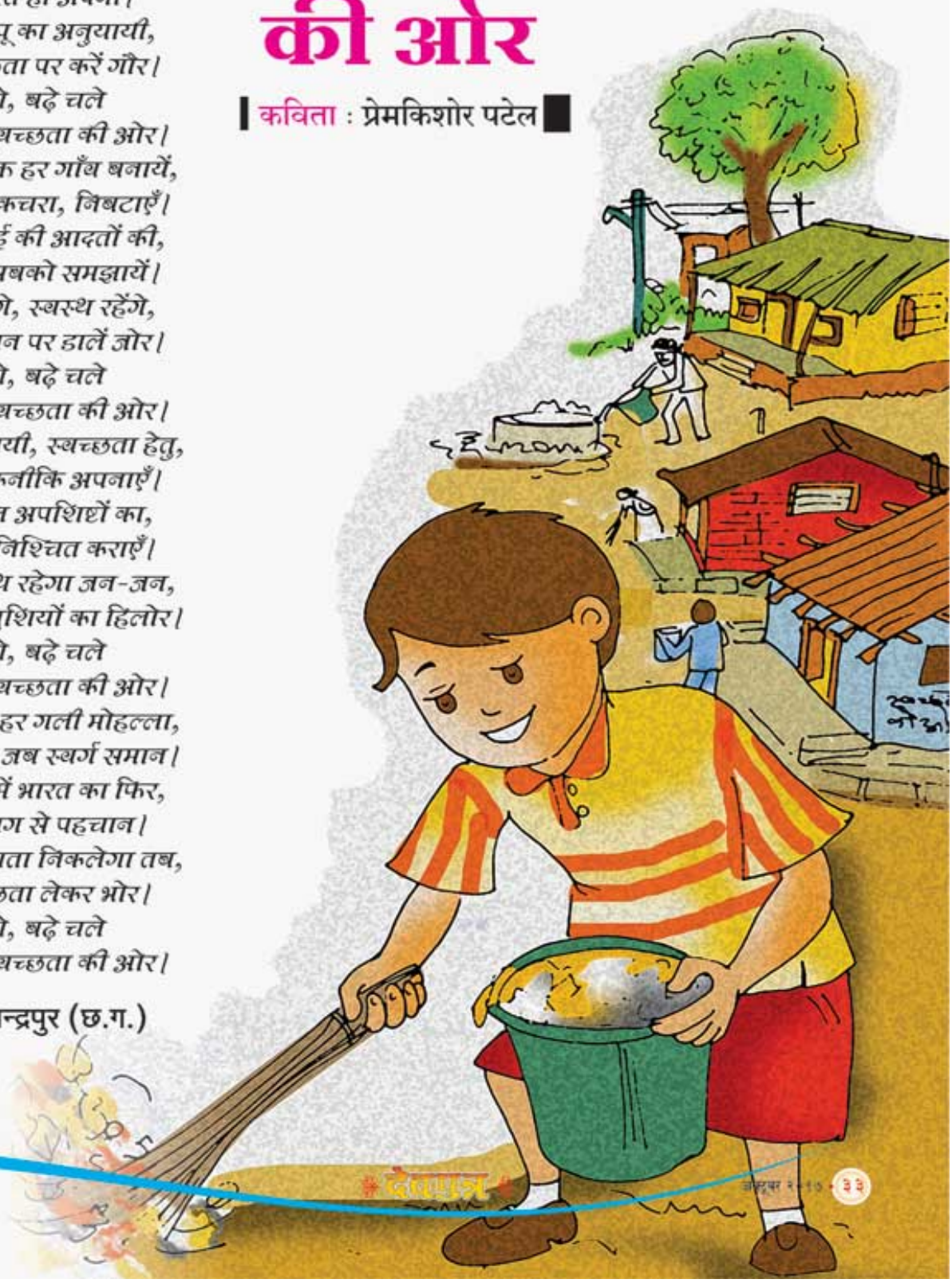

(गतांक के आगे)

कामरूप के संत साहित्यकार (४)

कथासत्र – ३

संवाद : डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा'

फिर आया रविवार। शंकर, मनोरमा और माधव आतुर होकर प्रतीक्षा करते हैं रविवार के उस समय के लिए जब दादा से कहानी सुनने का अवसर आएगा। उस दिन भी समय पर तीनों आकर बैठ गए। इतने में दादा जी को धीरे–धीरे आते देखा। नजदीक पहुँचते ही तीनों ने एक साथ कहा–राम–राम...

मनोरमा – दादा जी ! आज हमको कामरूप के बारे में जानकारी दीजिए। आज हम बीच में कुछ अप्रासंगिक बातें न उठाएँगे।

दादाजी – ठीक है, आज तुम लोग ध्यान से सुनते जाओ और स्मरण रखने का प्रयास करो।

माधव – जी हाँ नानाजी । आज हम चुपचाप सुनते जाएँगे। अब शुरु करें।

दादाजी ने आँखे मूंदकर कुछ क्षण चुप रहे और आँखें खोलकर मुस्कुराए। धीरे–धीरे कहना शुरु किया– कहानी बहुत पुरानी है। हमारे भारतीय साहित्य में ऐसी कुछ कहानियाँ है जो आज के लिए अप्रासंगिक तथा अविश्वसनीय जैसा लगता है। परन्तु उन सबको छोड़कर भारतीय साहित्य और संस्कृति अधूरे से हो जाते हैं। हम अनेक देवी–देवताओं की पूजा करते हैं न? उनमें प्रमुख देवता कौन हैं?

मनोरमा – उस दिन आपने ही तो कहा था न? ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी प्रमुख देवता हैं।

दादाजी – और देवी?

शंकर – लक्ष्मी, उमा और ...

माधव – तुमने ठीक ही कहा, परन्तु लक्ष्मी और उमा यानी दुर्गा का महत्व सबसे अधिक है। उमा याने दुर्गा महादेव शिवजी की पत्नी थी। भारत के अधिकाधिक लोग शिव दुर्गा के उपासक थे और आज भी हैं। एक समय था जब पूर्वोत्तर भारत के लोग पूर्णतः शिव दुर्गा के उपासक रहे थे। उस क्षेत्र में शिवस्थान और शक्ति पीठ, अर्थात देवी तीर्थ बहुत हैं। उनमें भी 'कामाख्या देवी' का पीठस्थान विश्वविख्यात है। इस कामाख्या की उत्पत्ति के साथ ही कामरूप नाम का इतिहास जुड़ा हुआ है।

शंकर – दादाजी! पूर्वोत्तर के लोग किन देवताओं की पूजा करते हैं?

दादाजी – कहा न पूर्वोत्तर की प्राचीन परम्परा थी शिव और दुर्गा, परन्तु वर्तमान विष्णु के उपासकों की संख्या ही अधिक हो गई हैं, तो भी शिव दुर्गा के भक्तों की संख्या भी कम नहीं हैं। इसके बारे में मैं बाद में तुम्हें बताऊँगा। सृष्टि के प्रारंभ के समय के बाद दक्ष नाम का एक प्रजापति अर्थात् राजा ने राज किया था। उनकी सौ बेटियाँ थी। सबसे छोटी बेटी सती का विवाह शिवाजी से हुआ था। सती राजा दक्ष की अत्यंत लाड़ली कन्या थी और दामाद शिवजी भी प्यारे थे, परन्तु किसी कारणवश उनके साथ विवाद हो गया। एक बार राजा दक्ष ने एक बड़ा यज्ञ का आयोजन किया। सभी देवताओं को आमंत्रित किया गया, परंतु बेटी सती और दामाद शिव को निमंत्रण नहीं दिया। धूम–धाम से यज्ञ का प्रारंभ हुआ। अपने–अपने विमानों से देवियों के साथ देवतागण जाने लगे। उधर नारद जी आकर देवी सती को पिता के यज्ञ के बारे में सूचना दी। स्त्री पिता के घर जाने के लिए उद्विग्न होती रहती है, उस में भी यदि कोई उत्सव हो तो बात ही क्या। सती पिता के घर जाने के लिए आतुर हो गई और पति से अनुमति माँगी। शिवजी ने कहा कि निमंत्रण के बिना वहाँ जाना मंगलदायक नहीं होगा। परन्तु सती कुछ भी परवाह न कर चली गई। शिवजी चिन्तित होकर कैलाश में बैठे रहे। सती के साथ नन्दी–भृंगी सहित गण भी चल पड़े। सती पिता के यज्ञस्थल पर पहुँच गई परन्तु किसी ने उनको आदर सहित स्वागत नहीं किया। केवल इतना ही नहीं पिता दक्ष ने जब देखा तो आग बबूला होकर देवाधिदेव महादेव शिव की निंदा करने लगे और निमंत्रण के बिना यज्ञ स्थल पर पहुँच जाने के कारण सती को भी तिरस्कार करने लगे। पिता ने जब शिवजी का अपमान किया तब सतीजी रह नहीं पाई और यज्ञ स्थल पर ही योग के द्वारा प्राण त्याग कर दिया। यज्ञ स्थल में हाहाकर मच गया। उस समय शिवजी कैलास में ध्यान मग्न होकर बैठ थे। इतने में नारद जी जाकर शिवजी को सती के प्राण त्याग का समाचार दिया। पत्नी सती

शिवजी को प्राणों से भी प्यारी थी। संवाद सुनते ही वे अत्यंत क्रोधित होकर अपने सिर से एक जट तोड़कर जमीन पर पटक दिया और वहां से वीरभद्र नाम का एक प्रचण्ड वीर गण की उत्पत्ति हुई। वह तुरंत दक्ष के यज्ञ स्थल पहुँच गया और यज्ञ का विध्वंस कर दिया। केवल इतना ही नहीं अधिक बक–झक करने वाले दक्ष महाराज का सिर तोड़कर यज्ञ कुण्ड में डाल दिया। सभी देवी देवताएँ, ऋत्विक और पुरोहित वहाँ से चले गए। शिव के गणों का उल्लास से सब भयभीत हो गए। दक्ष का यज्ञ नष्ट हो गया। ज्ञानी लोगों ने सोचा अहंकारी दक्ष को उचित सजा मिली। परन्तु यह भी सोचा कि यह यज्ञ संपूर्ण न होने के कारण संसार का अकल्याण होगा। आखिर विष्णु और ब्रह्मा जी ने आकर शिवजी को प्रसन्न किया और यज्ञ सम्पूर्ण कराने का प्रयास किया। परन्तु उस समय यज्ञ का यजमान दक्ष मुण्डविहीन होकर पड़ा था। उसके बिना यज्ञ संपूर्ण कौन करेगा। ब्रह्मा ने देवताओं के वैद्य अश्विनी को बुलाया और एक बकरे का सिर संयोजित कर जीवित करने का आदेश दिया। अश्विनी कुमार ने बकरा का सिर संयोजित कर दक्ष को पुनर्जीवित कर दिया।

मनोरमा – दादाजी! यह बहुत असंभव कथा है कि मरे हुए एक मनुष्य को बकरे का सिर संयोजन कर जीवित किया, आश्चर्य की घटना है या नहीं?

दादाजी – अरे बेटा, तुम बहुत अच्छा सवाल पूछा। आजकल चिकित्सा विज्ञान में शरीर का विभिन्न अंग–प्रत्यंग हटाकर पुनः प्रत्यारोपित करते है कि नहीं?

तीनो– हाँ करते हैं।

दादाजी – तब? उस युग में भी शल्य चिकित्सा तथा प्रत्यारोपित करने की व्यवस्था थी। तुम लोग ने वेदों का नाम सुना है न?

माधव– जी हाँ नानाजी !

दादाजी – वेद कितने हैं?

माधव – वेद तो ....चार हैं न?

दादाजी – उनका नाम बताओ और...(सिर खुजालता है)

मनोरमा – मैं कहती हूँ। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ठीक है न दादाजी।

दादाजी – ठीक है बेटी! देखों हमारे ऋग्वेद में भी इस प्रकार के इलाज अर्थात् शल्यकर्म और प्रत्यारोपण का वर्णन है। जब बड़े हो जाओंगे तो पढ़ कर देखोंगे।

तीनों – जरुर देखेंगे। आगे और क्या हुआ?

दादाजी– किसी प्रकार यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। दक्ष को बकरे का सिर लेकर जीवित रहना पड़ा।

शंकर – दादाजी! उसको देखकर लोग जरूर हँसते थे न?

दादाजी – हाँ, हँसते होंगे। परन्तु इसका और एक कारण है कि दक्ष महा अहंकारी और बाहुबली था। किसी की परवाह नहीं करता था। बकरे की तरह वे काम करता रहता था। इसलिए उसका सिर बकरे के जैसा हो गया। इसलिए बातें करते समय सावधान होकर करना चाहिए।

मनोरमा – आपने आज बहुत अच्छी बातें सुनाई। आज से हम बहुत सावधान होकर बाते करेंगे। है न माधव भैया?

दादाजी – यज्ञ सम्पन्न होने के पश्चात् दुःख के साथ सब लोग अपने–अपने स्थान पर चल पड़े। उधर शिवजी यज्ञस्थल पहुँच कर सती का शव देखा और शोकोन्मत्त होते हुए शव अपने कँधे पर उठा लिया। अब देखो अँधेरा छा गया। आज के लिए राम राम

तीनो – राम–राम .....राम–राम

(निरंतर आगामी अंक में)

● **ब्रह्मसत्र तेतेलिया, गुवाहाटी (असम)**

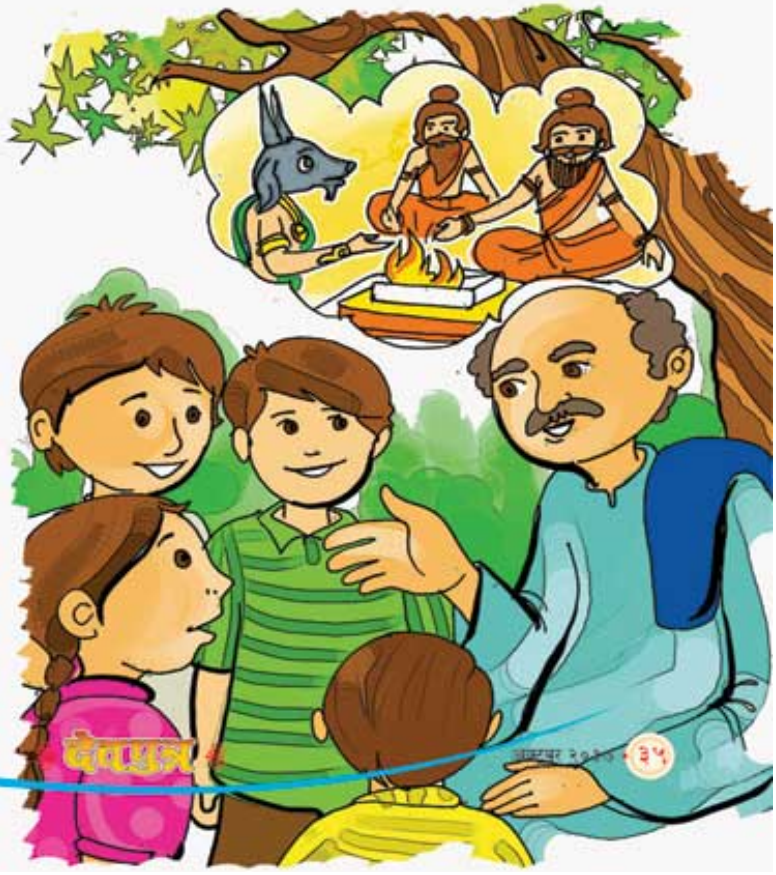

।। वृद्धजन दिवसः १ अक्टूबर ।।

दादी माँ

कहानी : डॉ. राजीव गुप्ता

दीपू शाला से आकर अभी भोजन करने बैठा ही था कि उसी समय निर्मला आ गई।

निर्मला ने आते ही दीपू की माँ, वंदना से कहा– ''बहू रुपए हो तो दो जरा, बहुत जरूरत आ पड़ी है। सिलाई के रुपए मिलते ही तुम्हें लौटा दूँगी।''

''हाँ, हाँ, क्यों नहीं अम्मा जी! तुम यहीं बैठो, मैं अभी लेकर आई। निर्मला चारपाई पर बैठने के लिए कहकर वंदना रुपए लेने के लिए अन्दर के कमरे में चली गई।

निर्मला तब तक दीपू से बातें करने लगी। दीपू अनमने ढंग से उनकी बातों का जवाब देता रहा।

वह उनसे बहुत चिढ़ता था। एक तो निर्मला को सुनाई कम पड़ता था, इसलिए उसे बहुत चिल्ला कर उनकी बातों का जवाब देना पड़ता। दूसरे वह जब तब माँ से कुछ न कुछ माँगने चली आती और बहुत देर तक बैठी–बैठी दुनिया भर की बातें करती रहती थीं।

माँ ने आकर निर्मला को ५०रुपए दिए। फिर मना करने पर भी उसे चाय बनाकर पिलाई। निर्मल कुछ देर बातें करके वहाँ से चली गई।

''यह बुढ़िया न जाने क्यों रोज रोज यहाँ रुपए

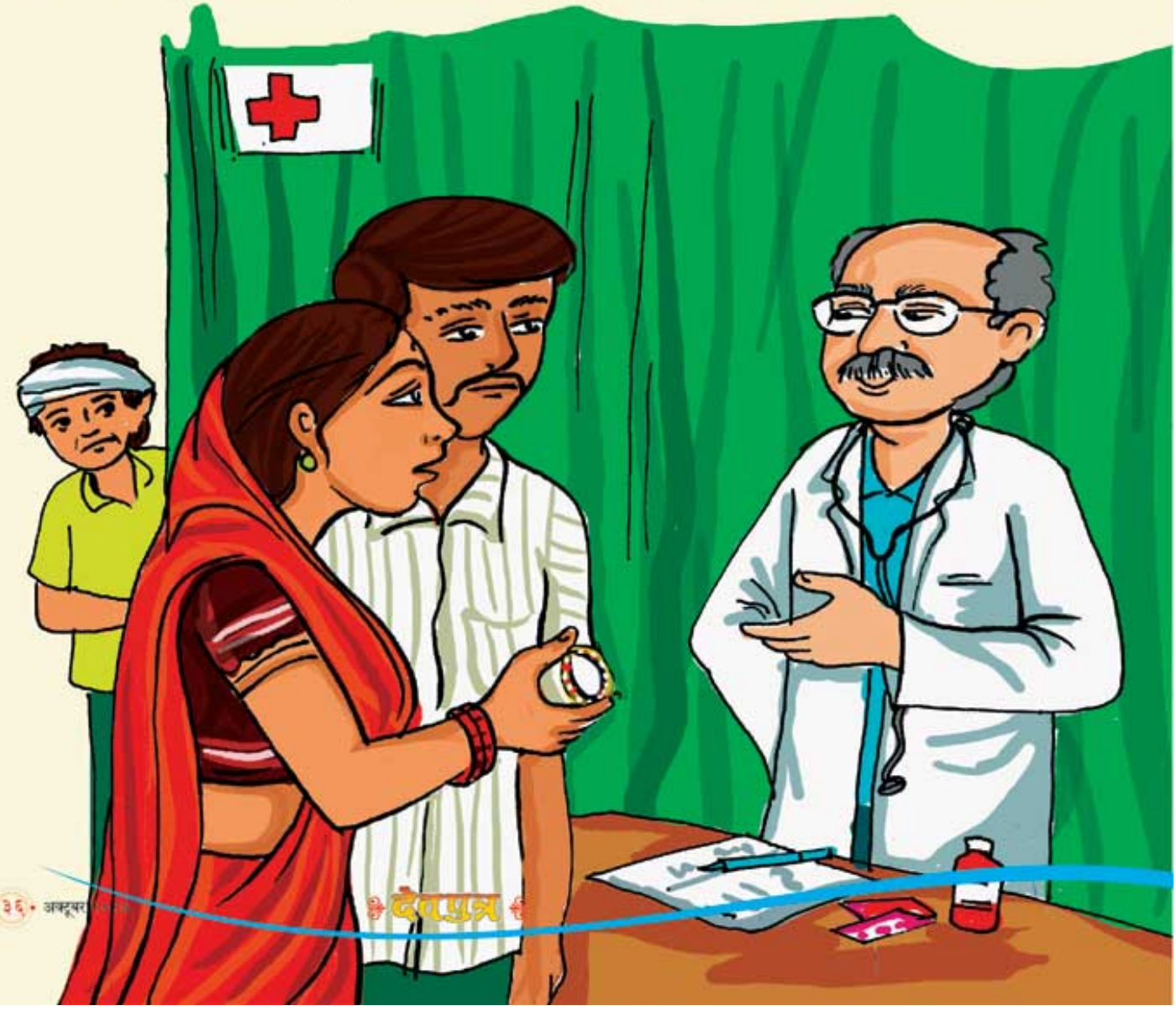

माँगने आ जाती है।'' उसके जाते ही दीपू ने बुरा सा मुँह बना कर कहा।

''ऐसा नहीं कहते, बेटा! उनसे दादी माँ कहा करो। वे गरीब हो कर भी बहुत ईमानदार हैं। आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ कि उन्होंने रुपए लेकर न लौटाए हों।'' वंदना ने समझाया।

सुन कर दीपू चिढ़ गया।

वंदना ने फिर कहा, ''बेटा! उन्होंने हमेशा हमारे सुख दुख में साथ दिया है। आज उनकी स्थिति अच्छी नहीं है तो हमें उनसे मुँह नहीं मोड़ लेना चाहिए। बेचारी का कोई भी तो नहीं है।''

दीपू कुछ नहीं बोला चुपचाप खाना खाकर खेलने के लिए घर से निकल गया।

एक दिन दीपू विद्यालय से लौट रहा था। अचानक विपरीत दिशा से तेजी से आती हुई मोटर साइकिल से वह टकरा गया।

मोटर साइकिल वाला तो वहाँ से भाग निकला, पर दीपू बेहोश होकर वहीं गिर गया। उसके सिर में चोट आई थी।

उसके चारों ओर भीड़ जमा हो गई। सब लोग तमाशा देख रहे थे, पर कोई उसे डॉक्टर के पास ले जाने के लिए तैयार न था।

तभी भीड़ को ढकेलती हुई निर्मला वहाँ आई। वह सेठ दीनानाथ के यहाँ से भोजन बनाकर लौट रही थी।

दीपू को इस हाल में देखकर निर्मला घबरा गई। पर दूसरे ही पल उसमें न जाने कहाँ से हिम्मत आ गई। उन्होंने एक रिक्शा रोका और दीपू को पास के ही एक अस्पताल में ले गईं। इस काम में कुछ अन्य लोगों ने भी उसकी मदद की।

जब तक दीपू होश में आया, तब तक उसके माता–पिता भी आ चुके थे। निर्मला ने उन्हें डॉक्टर साहब से फोन करवा दिया था।

दूसरे दिन दीपू घर जाने लायक था। जब दीपू के पिताजी ने अस्पताल का भुगतान चुकाया तो डॉक्टर साहब ने उन्हें सोने की एक चूड़ी दी।

यह तो अम्मा जी की चूड़ी है। वे हमेशा इसे पहने रहती थीं। चूड़ी देखते ही वंदना ने कहा।

''जी हाँ... यह अम्मा जी की ही चूड़ी है। कल मेरे बहुत मना करने पर भी उन्होंने मुझे यह चूड़ी दे दी थी और कहा था कि दीपू के इलाज में कोई कमी नहीं रहना चाहिए।'' डॉक्टर साहब ने बहुत श्रद्धा से बताया।

दीपू भी वहीं खड़ा डाक्टर साहब की बातें बहुत ध्यान से सुन रहा था। उसे दुःख था कि वह आज तक अपनी दादी माँ को ठीक से समझ न सका था।

● फर्रुखाबाद (उ.प्र.)

।। बाल प्रस्तुति।।

नील गगन के तारे

कविता : प्रियंका प्रजापति

नील गगन में जितने तारे,
सारे हमें लगते हैं प्यारे।
भोर होते छिप जाते हैं,
शायद सूरज से डरते हैं।
शाम को फिर आ जाते हैं,
चाँद से मिलकर रहते हैं।
रूप है उनका बहुत विशाल,
देख कर मन होता निहाल।
दूर अधिक धरती से रहते,
इस कारण ये छोटे दिखते।
तारे सभी झिलमिल करते,
अनेक हैं, पर हिलमिल रहते।

● गौरझामर (म.प्र.)

बिन्दु मिलाओ

• चाँद मो. घोसी

बताओ यहां कौन-कौनसे कितने प्राणी चित्रित हैं?

उत्तरः-सांप 4, गिलहरियां 4 और डाइनासौर 1 हैं.

एक से 44 तक के बिंदुओं को मिलाकर चित्र बनाओ और अपनी इच्छानुसार सुंदर रंग भरो.

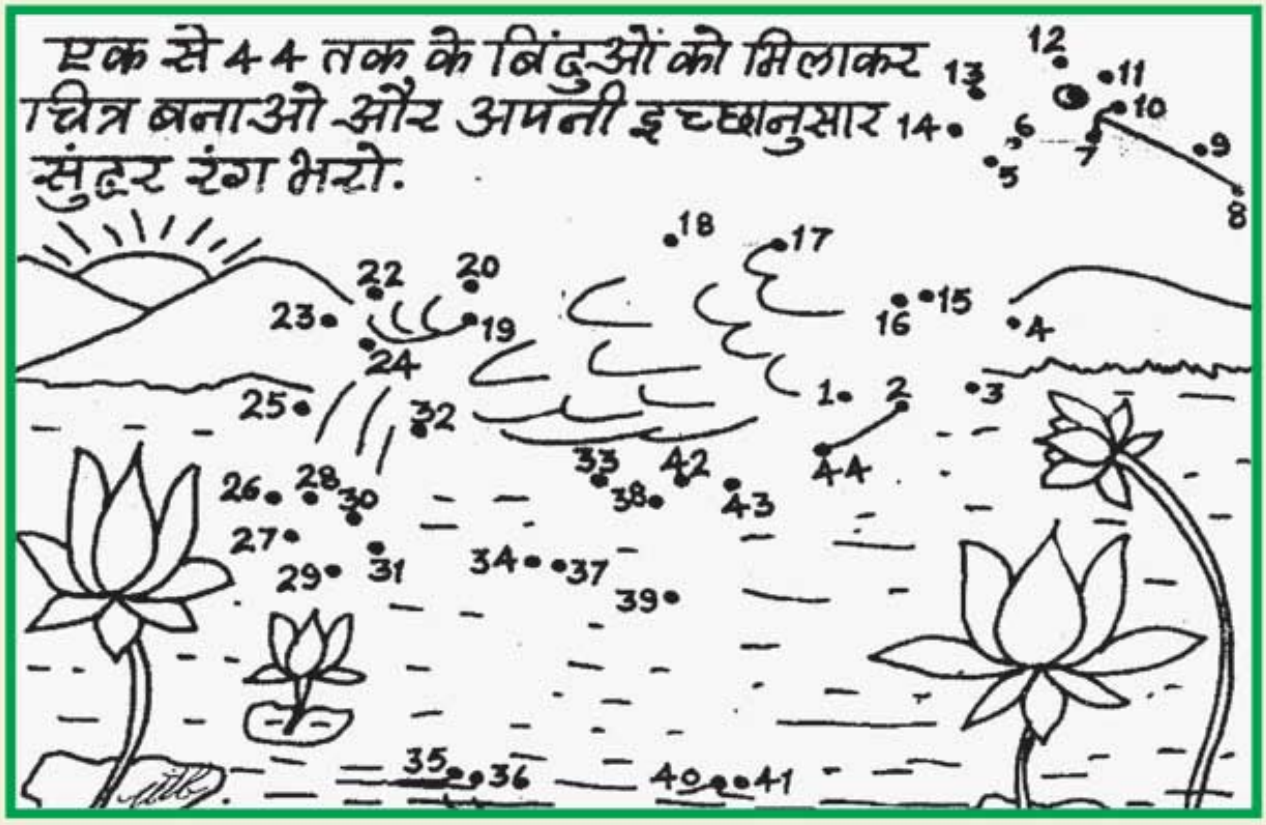

इमली चख

कविता : डॉ. फहीम अहमद

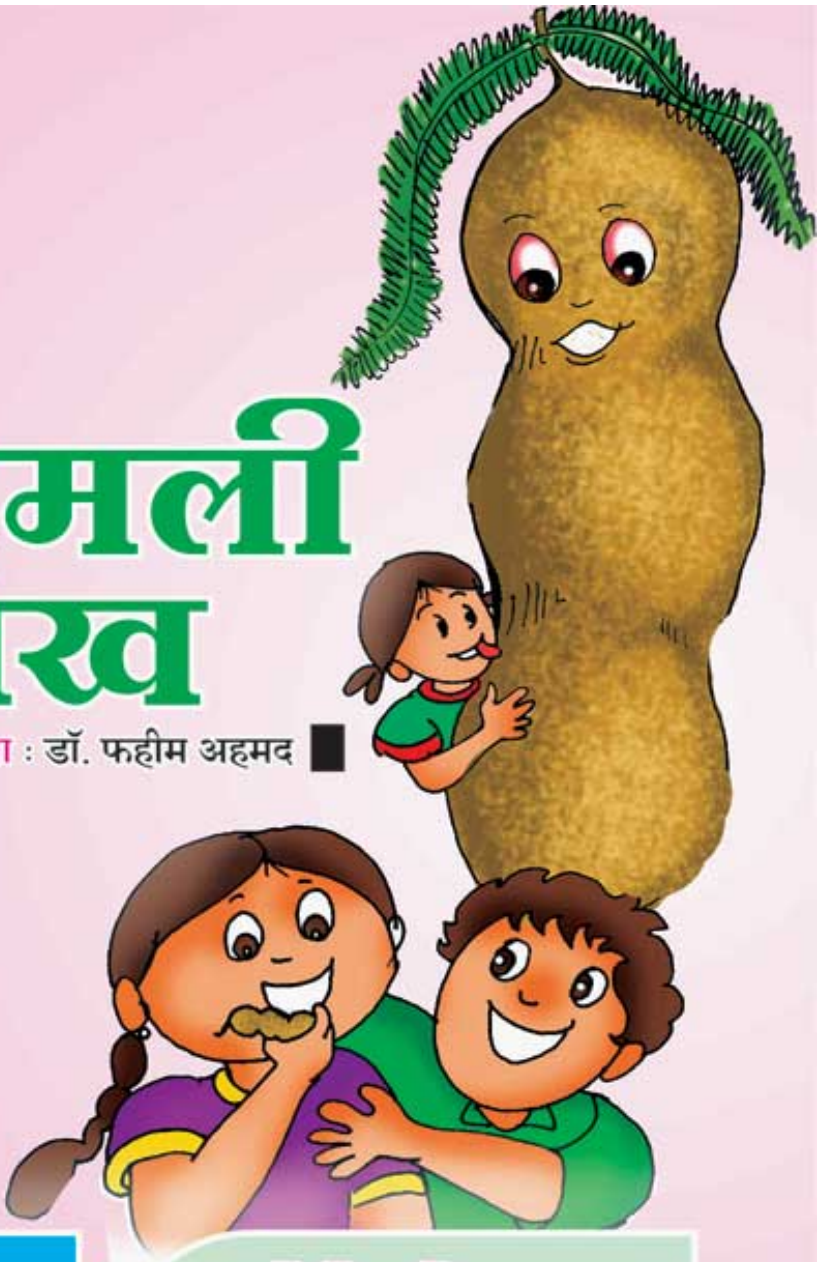

इमली चख री, इमली चख
गुल्लो रानी, इमली चख।
माना कि यह खट्टी है
पर कित्ती चटपट्टी है
ले लो बरना कुट्टी है।
देर न कर बस थोड़ी सी
इमली अपने मुह में रख।
आया है मुँह में पानी
छोड़ शरम गुल्लो रानी
तू अब तक क्यों न मानी?
लेना है तो जल्दी ले
मार रही हूं कब से झक!
खट्टी मीठी गीली है
इमली बड़ी रसीली है
पर तू बड़ी हठीली है।
सच्ची अगर सहेली तू
ले ले बस दस गिनने तक।

● लखनऊ (उ.प्र.)

संस्कृति प्रश्नमाला

(१) निषादराज गृह
(२) बर्बरीक
(३) अयरब्राह्मण
(४) द्वरिका
(५) श्री गुरुग्रंथ साहिब
(६) आचार्य विष्णुगप्त 'चाणक्य'
(७) धर्मपाल
(८) मंगल पाण्डे
(९) आमेट ठिाकने
(१०) क्रायेजिनिक इंजन

सही उत्तर

छोटे से बड़ा

१०, ४, १, ९, ५
८, ३, ७, ६, २

अंतर बताओ

(१) मकान की खिड़की छोटी है। (२) सुराही का ढक्कन गायब है। (३) आदमी की मूंछे काली हैं। (४) प्लेट में कम गोलगप्पे हैं। (५) सामने खड़ा बच्चा हंस नहीं रहा। (६) उसका पैर भी नहीं दिख रहा (७) दीदी की नाक गायब है। (८) स्टूल भी गायब है।

।। पुण्यतिथि : ८ अक्टूबर ।।

प्रेमचंद की उदारता

प्रेरक प्रसंग : रामभाऊ शौचे

प्रसिद्ध उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद का कोट बहुत पुराना हो गया था। उनकी पत्नी नया कोट बनवाने का कहती और पैसों की तंगी बताकर वे बात टाल देते। एक दिन पत्नी ने उन्हें रुपये देकर कहा कि घर लौटते समय नया कोट जरुर खरीद कर लाना। सायंकाल खाली हाथ लौटे तो पत्नी ने कारण पूछा। प्रेमचंद जी ने उत्तर दिया– ''उनके एक निर्धन परिचित के सुपुत्री के विवाह पर उसे धन की आवश्यकता थी। इसलिए सोचा कि अपना नया कोट कभी भी खरीदेंगे। किन्तु उस बच्ची का विवाह धनाभाव से नहीं होगा। सो तुमने, दिए पैसे उसे दे दिए। गलत तो नहीं किया मैंने ?'' सुनकर पत्नी गद्‌गद् हो उठी।

निजी परिवार को उससे भी बड़ा समाज परिवार का अंग मानने से हमारे हृदय में आत्मीयता की उमंग उठती है, जिससे स्वयं की आवश्यकता कम करके अधिक जरुरतमंद को देने की अपने मन की यह उदारता जीवन को सुख शांति देती है।

● रतलाम (म.प्र.)

आपकी पाती

देवपुत्र का अगस्त २०१७ अंक प्राप्त कर पूर्वानुसार हार्दिक प्रसन्नता हुई। यह पत्रिका बच्चों को फुलवारी जैसी प्यारी लगती है, क्योंकि विविध सामग्री की गंध एवं साज सज्जा के रंग से ओतप्रोत रहती है। इसे बड़े सयाने लोग भी बड़े चाव से पढते हैं। रचनाओं का चयन, पत्रिका के उन्नयन हेतु किसी सेतु से कम नहीं है।

अपनी बात स्तम्भ के अंतर्गत आपके संदेश विशेष प्रासंगिक रहते हैं। इस बार ''गुरु को तो मानते हैं परन्तु गुरु की नहीं मानते'' इस विसंगति से बालपन को बचाने की आपकी इच्छा तो शिक्षा ग्रहण करने योग्य है। यह सच है कि विचार ही आचार का आधार कहलाता है। गुरु के प्रति सच्ची आस्था जगाने के लिए संपादकीय भी सराहनीय है।

● राजा चौरसिया, कटनी (म.प्र.)

* * * * * * * * * *

देवपुत्र का अगस्त २०१७ का अंक अपनी अलग छठा बिखेरे हुए था क्योंकि यह कृष्ण जन्माष्टमी और स्वतंत्रत दिवस (१५ अगस्त) को लिए हुए था। एक ही दिन दोनों पर्वों का होना एक अनोखा संयोग है। इसमें छपे लेख भी प्रेरणादायक थे। आपसे निवेदन है की भविष्य में इसमें कुछ प्रतियोगितायें भी शामिल करें जिसमें सही उत्तर देने वालों को प्रमाण पत्र देने का प्रावधान हो।

● दीपा गुप्ता, इन्दौर (म.प्र.)

।। बाल प्रस्तुति।।

भगवान को पत्र

कहानी : अलिशा सक्सेना

एक गांव में एक गरीब किसान रहता था। अपने परिवार के साथ, उसके परिवार में दो बेटे और पत्नी थी। वह खेती करके अपना जीवन यापन करता था। बहुत मेहनत के बाद भी वह अपने परिवार का ढंग से पालन पोषण नहीं कर पाता था। लेकिन उसे और उसके परिवार को भगवान में बहुत भरोसा था वे भगवान की रोज पूजा करते थे और अपने दुःख दर्द उनसे कहते थे किसान का बड़ा बेटा राम विद्यालय जाकर पढ़ना लिखना चाहता था और पढ़-लिख कर नौकरी करके अपने परिवार को औरों की तरह खुश देखना चाहता था। लेकिन पिता की कम कमाई की वजह से ये संभव नहीं हो पा रहा था। इस कारण वह बहुत उदास रहने लगा।

उसने कहीं सुना था कि भगवान अपने भक्तों की हर बात सुनते हैं अतः वह भगवान की पूजा करने लगा। और भगवान से अपने परेशानी बता कर मदद करने की गुहार लगाने लगा। कई दिन तक जब कुछ नहीं हुआ तो उसने सोचा कि भगवान के तो बहुत सारे भक्त हैं शायद इसलिए इतने दिनों से भगवान ने उसे कोई मदद नहीं पहुँचाई। इसलिए क्यों न अपनी बात लिखकर भेजूँ सो उसने भगवान को एक पत्र लिखा उसमें उसने अपनी सारी परेशानी लिखकर डाकघर में दे दी।

डाकघर के कर्मचारियों ने जब भगवान के नाम की खुली चिट्ठी पढ़ी तो उसका बहुत मजाक बनाया। उनमें से कुछ कर्मचारियों ने इस पत्र को पढकर उस बच्चे की मदद करने का संकल्प लिया। और अपने वेतन में से प्रति माह कुछ अंश जमा कर उस बालक को भेजना प्रारम्भ कर दिया।

इधर बहुत दिन तक जब बालक राम को भगवान की चिट्ठी नहीं मिली तो वो बहुत उदास हो गया। उसका भगवान से भी भरोसा उठने लगा।

एक दिन डाकिया उसके नाम का मनीआर्डर ले आया। जिसे देखकर राम बहुत आश्चर्य चकित हो गया। उसने उसे भगवान की सहायता समझकर ले लिया। उस राशि से उसने विद्यालय में प्रवेश लिया और खूब मन लगाकर पढाई करने लगा।

डाकघर के उन कर्मचारियों को बहुत संतोष हुआ कि उनके द्वारा दी गई राशि किसी जरुरतमंद बच्चें को काम आ रही है जिससे उस किसान के बेटे का भविष्य बन सकेगा। और उसका भगवान पर विश्वास बना रहेगा।

• अहमदाबाद (गुज.)

पुस्तक परिचय

सतरंगी कहानियाँ

मूल्य ५०/-

सौ. पद्मा चौगाँवकर द्वारा रचित इन रोचक कहानियों में बालमन की हुलस और कल्पना को आकार देते भाव हैं।

प्रकाशक : बोधि प्रकाशन एफ-७७, सेक्टर-९, रोड़ नं.-११, करतापुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, बाईस गोदाम, जयपुर ३०२००६ (राज.)

सफलता का शिखर

मूल्य ६०/-

प्रसिद्ध साहित्यकार **महावीर रवांल्टा** रचित सरल, सुबोध, गेय और हृदयस्पर्शी बाल कविताओं का संग्रह है।

प्रकाशक : चित्रा प्रकाशन, अकोला, चित्तौड़गढ़ ३१२००५ (राज.)

हम विश्वास जगाएंगे

मूल्य ३००/-

जाने माने बाल साहित्यकार **डॉ. राकेश चक्र** की रोचक, बोधक एवं मनोरंजक २२० अनूठी कविताएं जो बच्चों के मन में सकारात्मकता सृजन करें।

प्रकाशक : आरती प्रकाशन, इन्दिरा नगर, लाल कुंआ (नैनीताल) उत्तराखण्ड

अक्षर दीप जलाएं

मूल्य ८०/-

सुरेश कुशवाहा द्वारा रचित ४३ बाल कविताएँ जिनमें बचपन के अनेक विषयों को संजोया गया है।

प्रकाशक : भेल हिन्दी साहित्य परिषद्, भोपाल

दोस्त हमारा इतना प्यारा

मूल्य २५/-

वरिष्ठ बाल साहित्यकार **डॉ. देशबंधु 'शाहजहांपुरी'** का बहुरंगी चित्रों एवं विषयों से सजा बाल कविता संग्रह।

प्रकाशक : शोभा प्रकाशन, शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

प्राणों से प्यारा झण्डा

मूल्य ४५/-

डॉ. राकेश चक्र राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना से भरी १५ बाल कविताओं का प्रेरक संकलन।

प्रकाशक : आरती प्रकाशन, इन्दिरा नगर, लालकुआ (नैनीताल) उत्तराखण्ड

छोटे वैज्ञानिक

मूल्य १५०/-

सामान्य बाल साहित्य से हटकर बच्चों के लिए विज्ञान के प्रति रुचि जाग्रत कर वैज्ञानिक सिद्धान्तों को सरलतम रूप से सिखाने वाली सचित्र ६० प्रयोग वाली **श्री विजय कुमार सी. वैरेंकर** की स्कूल बैग में विज्ञान प्रयोगशाला की साकार कल्पना।

प्रकाशक : विघाभारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, संस्कृति भवन, सलारपुर रोड़, कुरुक्षेत्र १३६११८ (हरियाणा)

बनाओ सजाओ : झालर

• राजेश गुजर

• *सामग्री – रंगीन (क्राफ्ट) पेपर, मोटा धागा, सुई, रूई, कैंची, चिपकाने वाला पदार्थ (फेविकोल) छोटे रंगीन मोती, छोटी घंटी।*

①

रंगीन क्राफ्ट पेपर को मनचाहे आकार (डिजाइन) में काटें। जैसे- फूल, चिड़िया, तितली आदि। जितने भी बनाना हैं उन्हें डबल काट लें ।

② इन सारे कटे हुए डिजाइन में थोड़ी रूई भरकर इसके ऊपर डबल वाला डिजाइन चिपका दें। इस तरह सभी फूलों को चिपकाने के बाद सूखने दें।

③

जितनी लम्बी झालर बनानी हैं उतना धागा लें और सूई में इसे पिरोकर फूलवाली डिजाइन को इस धागे में पिरो दें। गाँठ लगाएँ। फिर एक मोती लें इसे भी पिरोकर छोटी गाँठ लगा लें। ऐसे सभी कर लें ।

④

इस तरह झालर यह तैयार कर लें, इसके अन्तिम छोर पर 1 छोटी घंटी लगा दें।

इस झालर को दीपावली पर दरवाजे पर लटका दें।

।। बाल प्रस्तुति ।।

दीवाली मनायें लेकिन ध्यान से

जानकारी : रिया कश्यप

दीवाली पर बहुत से लोग ऐसे पटाखे जलाते हैं और खुद के साथ–साथ दूसरों के लिए भी खतरा पैदा करतें हैं। चार मीटर तक १२५ डेसीबल का शोर करने वाले पटाखों पर कानूनी रूप से पाबंदी है। लेकिन त्यौहार के दिन इन बंदिशों को मानने वाले बहुत कम लोग दिखते हैं। पटाखों से होन वाली दुर्घटनाओं से जहाँ जानमाल की हानि होती हैं। वहीं पटाखों में प्रयोग होने वाले रसायनों का भी हमारे शरीर पर दुष्प्रभाव पड़ता है।

पटाखों में उपयोग होने वाले रसायनों से नुकसान -

कॉपर – इससे सांस लेने की नली में तकलीफ हो जाती है।

कैडमियम – किडनी को नुकसान और रक्ताल्पता

लेड (सीसा) – नर्वस सिस्टम पर असर

मैग्नीशियम – पक्षाघात, भावनात्मक अस्थिरता और चलने में दिक्कत

सोडियम – त्वचा पर असर

जिंक – उल्टी होना

नाइट्रेट – मानसिक बीमारी हो सकती है।

नाइट्राइड – पीड़ित कोमा में जा सकता है।

केन्द्रीय प्रदूषण बोर्ड के अनुसार दिल्ली में पटाखों के कारण दीवाली के बाद वायु प्रदूषण ६ से १० गुना और आवाज का स्तर १५ डेसीबल बढ़ जाता है। पर्यावरणाविद् बाबूलाल जाजा बताते हैं पटाखें जलाने से कार्बन मोनो आक्साइड, नाइट्रिक व कार्बनिक एसिड जैसी जहरीली गैसे वायु मंडल में फैलती है। इससे इंसान के शरीर में रक्त कैंसर, पेड़–पौधां व जल स्रोत के दूषित होने से जलीय जीवों के मरने की आशंका रहती है। इनसे ओजोन परत को नुकसान होने का खतरा बढ़ जाता है।

जानलेवा साबित हो सकती है पटाख जलाने में लापरवाही-

दीपावली पर पटाखा जलाने के दौरान जरा सी सावधानी साबित हो सकती है। डॉक्टरों के मुताबिक लोगों को पटाखों से निकलने वाली चिंगारियों, धूल और धमाकों से बचना चाहिए। ये आखों फेफड़ों व दिल को नुकसान पहुचा सकतें है। पटाखों के धुएं में कार्बन डाइऑक्साइड, सल्फरडाइऑक्साइड एवं नाइट्रस ऑक्साइड जैसे

भारत माता की जय

प्रसंग : शैवाल सत्यार्थी

भगिनी निवेदिता, मिदनापुर (बंगाल) में, छात्रों के सम्मुख भाषण दे रही थीं। उनके भाषण से प्रभावित होकर, युवकों ने - 'हिप-हिप हुर्रे' का नारा लगाया। यह सुनकर, उन्होंने कहा- 'तुम्हारे अंदर क्या अपनी भाषा के प्रति सम्मान नहीं है? तुम सब बांग्ला या हिन्दी के उद्घोष क्यों नहीं करते?'

वे आगे बोलीं- यदि कुछ कहना ही है, तो बोलो- भारत माता की जय! सच्चिदानन्द परमात्मा की जय!!

भगिनी निवेदिता के श्रीमुख से, राष्ट्र-भक्ति के ये स्वर सुनकर, छात्रों का स्वाभिमान जाग उठा, और पूरा सभा-स्थल 'भारत माता की जय' के गगनभेदी नारों से गूंज उठा।

● ग्वालियर (म.प्र.)

जहरीले तत्व होते हैं। पटाखों की तेज आवाज से कान का पर्दा फट सकता है और दिल के रोगियों की तकलीफ बढ़ सकती है।

कई बीमारियों को न्योता-

जयपुर के एसएमएस अस्पताल के नेत्र रोग के डॉ. कमलेश खिलवानी व डॉ. मुकेश शर्मा के अनुसार पटाखों का धुआं कार्निया में घाव बना देती है। इससे बचने के लिए सादा चश्मा पहनना चाहिए। जलन होने, चोंट लगने पर साफ पानी से धोकर चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। आंकड़ों के मुताबिक हर साल दीवाली के बाद आँख कान नाक संबंधी बीमारी के मामले दुगुने हो जाते हैं।

दिल के रोगी को ज्यादा खतरा-

विशेषज्ञ डॉ. विक्रम गोयल बताते हैं कि तेज आवाज से हार्ट अटैक हो सकता है। पटाखों के धुएं के कारण भी हवा में ऑक्सीजन की कमी होने के कारण दिल के रोगी की तेज आवाज से दिल की धड़कन भी अनियमित हो सकती है। डॉ. वीरेन्द्र सिंह के अनुसार पटाखे का धुंआ फेफड़ों में संक्रमण फैला सकता है। खासकर अस्थमा व एलर्जी से पीड़ित रोगियों को एहतियात बरतना चाहिए। इससे बचने के लिए पटाखों के धुंए से दूर रहें और डबल मास्क लगाकर पटाखें छोंड़े।

शारीरिक चोट के अलावा पटाखें में इस्तेमाल किए जाने वाला केमिकल कई प्रकार के बीमारियों और प्रदूषण को भी जन्म देते हैं। पटाखें हवा और वातावरण को प्रदूषित कर देते है। इससे ध्वनि प्रदूषण की मात्रा भी काफी बढ़ जाती है। तेज धमाका करने वाले पटाखों से कानों की सुनने की क्षमता पर भी प्रभाव पड़ सकता है। अजन्मे बच्चों पर भी इनका दुष्प्रभाव पड़ता है। गर्भवती महिलाओं को तेज आवाज वाले धमाकों से दूर रहना चाहिए। तेज धमाका बच्चों के मन में कभी न मिटने वाला भय पैदा कर सकता है।

● बिर्रा (छ.ग.)

सौ रुपैया चांदी के

कविता : डॉ. मालती शर्मा 'गोपिका'

पत्ता-पत्ता हरियाला करते
बड़े बड़े बून्दा पानी के
सौ रूपैया चान्दी के
ये बून्दा धरती पर पड़ते
हीरे मोती की फसल उगल
पत्ता-पत्ता हरियाला करते

नदी तालाब बावड़ी भरते
जाते जाते हमसे बोले
अब हम आएंगे अगले साल
यह पानी करना खर्च सम्हाल
हमको देर हुई आने में
तो हो जाओगे हाल बेहाल

• पुणे (महाराष्ट्र)

प्रविष्टियां आमंत्रित

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१७

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित मायाश्री राष्ट्रीय **बाल साहित्य पुरस्कार २०१७** वर्ष २०१६ में प्रकाशित बाल कहानी की पुस्तक हेतु प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार हेतु प्रकाशित पुस्तक की ३ प्रतियां मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार के नाम से ४०,संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.) पर ३०, जनवरी २०१८ तक प्राप्त होना चाहिए। पुरस्कार स्वरूप ५०००/- की राशि प्रदान की जाती है।

बाल साहित्यकारों से प्रविष्टि स्वरूप कृतियां सादर आमंत्रित हैं।

– संपादक

तकली रानी

कविता : हरप्रसाद रोशन

तकली रानी, तकली रानी,
सूत कातती तकली रानी।
लम्बे कद की पतली रानी,
सूत कातती तकली रानी।

रूई-रूई से धागा निकले,
कभी-कभी हाथों से फिसले,
जैसे फिसले मछली रानी,
सूत कातती तकली रानी।

चक्कर घिन्नी बनकर नाचे,
रीत पुरानी घर-घर बाचे,
युग बदला ना बदली रानी,
सूत कातती तकली रानी।

लोग ने कम इसको जाना,
पर तकली ने सब पहचाना,
हस्त कला की असली रानी,
सूत कातती तकली रानी।

● हलद्वानी (उत्तराखण्ड)

सही उत्तर
चित्र पहेली

सरदार सरोवर वि
मध्यप्रदेश
एक और संवेद

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

सरदार सरोवर डूब प्र
वर्तमान में दी गई सुविध

सरदार सरोवर डूब प्रभावित परिवारों को पूर्व में दिये गये लाभ :

- डूब प्रभावित परिवारों को पूर्व में उनकी अचल संपत्ति के मुआवजों के रूप में 526 करोड़ रुपये।
- प्रभावित पात्र परिवारों को पुनर्वास अनुदान मद में 38 करोड़ 83 लाख रुपये तथा रोजगार संपत्ति क्रय करने के मद में कुल 27 करोड़ 50 लाख रुपये का भुगतान।
- प्रभावित परिवारों को पुनर्वास स्थलों पर 5400 वर्गफिट का भू-खण्ड नि:शुल्क। भू-खण्ड नहीं लेने वाले परिवार को इसके बदले 50 हजार रुपये।
- प्रभावित परिवारों को भूमि के बदले भूमि के रुपये 5 लाख 58 हजार के विशेष पैकेज के अंतर्गत् 188 करोड़ रुपये।

सरदार सरोवर डूब प्रभावितों को वर्तमान में दिये गये लाभ :

उच्चतम न्यायालय के निर्णयानुसार-

- पूर्व का विशेष पैकेज नहीं लेने वाले 681 परिवारों को प्रति परिवार रुपये 60 लाख।
- पात्रता अनुसार अन्य 943 परिवारों को प्रति परिवार रुपये 15 लाख।

मध्यप्रदेश सरकार द्वारा घोषित :

- विशेष पुनर्वास पैकेज ले चुके 15 लाख।
- पुनर्वास स्थल पर मकान आवश्यकताओं के लिये प्रति परि
- जिन परिवारों की 25 प्रतिशत पूर्व में कोई पैकेज नहीं था, अब 15 लाख।
- जिन परिवारों की 25 प्रतिशत के लिये ली गई थी, उन्हें पूर्व में रुपये 15 लाख का पैकेज।
- किसानों को पाइपलाइन क्षति क
- पुनर्वास स्थलों के सतत् विकास
- पैकेज राशि से कृषि भूमि क्रय वहन करने पर रुपये 50 करोड़।
- महात्मा गांधी स्मारक निर्माण के
- मंदिर/धार्मिक स्थलों के पुनर्नि 12 प्रतिशत ब्याज की पूर्ति के लि
- पूर्व प्रावधान में भू-खण्ड के बद मकान निर्माण नहीं करने वाले का भू-खण्ड नि:शुल्क।

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

विस्थापित परिवारों की सजग और संवेदनशील संरक्षक - मध्यप्र

स्थापितों के लिये
सरकार की
नशील पहल

भावितों को पूर्व और
ाएं तथा आर्थिक पैकेज

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

परिवारों को भी प्रति परिवार रुपये

निर्माण तथा अन्य तात्कालिक
वार रुपये 5 लाख 80 हजार।

से कम भूमि डूब से प्रभावित है, उन्हें
उन्हें डूब भूमि के समानुपात में रुपये

से ऊपर भूमि पुनर्वास स्थल निर्माण
कोई पैकेज नहीं था। अब इन्हें भी

मुआवजा।

कार्यों के लिये रुपये 200 करोड़।

करने पर स्टाम्प ड्यूटी शासन द्वारा

लिये रुपये 5 करोड़।

र्माण के लिये मूल मुआवजा राशि पर
लिये रुपये 27 करोड़।

ले रुपये 50 हजार लेकर, कहीं भी
रिवार को भी 180/150 वर्गफिट

सरदार सरोवर परियोजना के लाभ :

अंतर्राज्यीय सरदार सरोवर परियोजना से गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान राज्य को विभिन्न लाभ मिलेंगे।

- परियोजना से बनने वाली बिजली का अधिकतम 57 प्रतिशत भाग मध्यप्रदेश को, 27 प्रतिशत भाग महाराष्ट्र को और 16 प्रतिशत भाग गुजरात को मिलता है।
- बांध की वर्तमान 121.92 मीटर ऊंचाई से बन रही बिजली के 57 प्रतिशत भाग के रूप में मध्यप्रदेश को औसतन 1750 मिलियन यूनिट बिजली प्राप्त हो रही है। गेट स्थापित होने के बाद जल भराव से 1300 मिलियन यूनिट बिजली का अतिरिक्त उत्पादन होगा। इस प्रकार इसके 57 प्रतिशत भाग के रूप में मध्यप्रदेश को प्रतिवर्ष लगभग 750 मिलियन यूनिट बिजली अतिरिक्त रूप से प्राप्त होगी।
- सरदार सरोवर का जो क्षेत्र मध्यप्रदेश में है, उसमें मछली उत्पादन बड़ी मात्रा में हो सकेगा। जलाशय/नदी से बड़ी संख्या में किसान उद्वहन कर सिंचाई का लाभ ले सकेंगे।
- परियोजना से गुजरात राज्य में लगभग 20 लाख और राजस्थान में लगभग 3 लाख हेक्टेयर सिंचाई के साथ ही सैकड़ों नगरों, ग्रामों को पेयजल तथा औद्योगिक जल उपलब्ध होगा।

मध्यप्रदेश सरकार द्वारा विस्थापित परिवारों के लिये घोषित उपरोक्त पैकेज रुपये 900 करोड़

प्रदेश सरकार

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2017

प्रविष्टियां सादर आमंत्रित

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१७

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल (भोपाल) द्वारा देवपुत्र के माध्यम से विषय केन्द्रित बाल साहित्य लेखन को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से 'डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार' की स्थापना वर्ष २०१६ में की गई। गत वर्ष षड्ऋतुवर्णन (काव्य) विषय पर आमंत्रित रचनाओं में से चयनित रचनाएँ बाल साहित्य सृजनपीठ म.प्र. इन्दौर द्वारा पुस्तकाकार भी प्रकाशित की गई एवं सर्वश्रेष्ठ पांच रचनाकारों को सम्मान निधि भी प्रदान की गई।

वर्ष २०१७ के लिए यह पुरस्कार भारत के ग्राम्य जीवन में संरक्षित जीवन मूल्यों एवं सांस्कृतिक चेतना पर केन्द्रित बाल कहानियों के लिए निश्चित किया गया है। हमारा उद्देश्य बच्चों में अपने ग्रामीण भारतीयों के प्रति सम्मान एवं उनकी श्रेष्ठता का भाव जगाना है। ग्रामवासिनी **भारत माता के ग्राम्यगौरव** पर आपकी रचनाएँ (बाल कहानी) सादर आमंत्रित हैं वरिष्ठ रचनाकारों से भी विनम्र आग्रह है कि वे इस प्रयत्न को मात्र प्रतियोगिता या पुरस्कार के रूप में न देखकर इसके पीछे छुपे बृहद उद्देश्य को महत्व दें। पुरस्कार तो वस्तुतः नव साहित्यिकों के लिए प्रोत्साहन हेतु संयोजित है।

निवेदन :

- आपकी रचना **बाल कहानी** ही हो।
- वह अप्रकाशित, अप्रसारित मौलिक हो, इसे आप स्वयं प्रमाणित करके भेजें।
- रचना हिन्दी भाषा में हो। (अनूदित रचनाएं न भेजें।)
- रचना हमें ३० जनवरी २०१८ तक अवश्य प्राप्त हो।
- लिफाफे पर 'डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१७ हेतु' अवश्य लिखें, जिससे वे देवपुत्र को प्राप्त होने वाली अन्य रचनाओं से पृथक की जा सकें।
- रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार देवपुत्र को होगा। पृथक किसी विशेषांक या स्वतंत्र पुस्तक के रूप में भी संभव है। प्रकाशित रचनाकारों को प्रकाशित कृति निशुल्क प्रदान की जावेगी।
- सर्वश्रेष्ठ ५ रचनाकारों को क्रमशः १५००/-,१२००/-, १०००/- एवं ५००/- रूपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जाएंगे।
- निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।

रचनाएं ४० संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.) के पते पर भेजिए।

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१७

प्रिय बच्चो,

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम जी भवालकर की पावन स्मृति (७ जनवरी) के अवसर पर भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता के लिए आपकी स्वरचित बाल कहानियाँ प्रविष्टि के रूप में आमंत्रित हैं। प्रतियोगिता केवल बाल लेखकों के लिए है अतः कहानी के स्वरचित, मौलिक एवं अप्रकाशित होने के प्रमाण पत्र के साथ अपना पूरा नाम कक्षा एवं घर के पते का पिनकोड सहित स्पष्ट उल्लेख अवश्य करें। आपकी बाल कहानी हमें ३१ मार्च २०१८ तक अवश्य प्राप्त हो जाना चाहिए। कहानी इस पते पर भेजें–

पुरस्कार

प्रथम : १५००/- ● द्वितीय : ११००/- ● तृतीय : १०००/-

५५०/- के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

भवालकर स्मृति
कहानी प्रतियोगिता २०१७
देवपुत्र
४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

एक राष्ट्र एक कर

व्यवसायियों को होने वाले लाभ

- निर्माता सहित 75 लाख से कम वार्षिक विक्रय वालों को कम्पोजिशन की सुविधा।
- एक देश, एक कर और एक बाजार। एक समान कर प्रणाली।
- ऑनलाइन कर प्रणाली से होगी सहुलियत
- कश्मीर से कन्याकुमारी तक चुंगी नाके समाप्त ।
- रोजमर्रा की वस्तुएं होंगी सस्ती, उपभोक्ता की क्रय शक्ति में होगा इजाफा।
- 16 करों के स्थान पर सिर्फ एक जीएसटी
- कर प्रक्रिया बेहद सरल, पारदर्शी एवं एकीकृत।
- बाधारहित इनपुट टैक्स की सुविधा।

आम उपभोक्ता को लाभ

- निर्यात बढ़ने से नए उद्योग लगेंगे और युवाओं को रोजगार प्राप्त होगा।
- नकली वस्तुओं का क्रय-विक्रय समाप्त होगा।
- उत्पादन की लागत कम होने से उपभोक्ताओं को होगा लाभ।
- आम जनता को भी दोहरे कर से मिलेगी मुक्ति
- कर प्रणाली का सीधा लाभ जनता को।

व्यवसायियों से अपेक्षा

- व्यवसायी पंजीयन की जानकारी जी.एस.टी.एन. में माइग्रेट कर जी.एस.टी. पंजीयन प्राप्त करें।
- पंजीयन माइग्रेट ना करने पर व्यवसाय को नुकसान हो सकता है।
- वाणिज्यिक कर कार्यालयों में संचालित हेल्प-डेस्क से सहयोग प्राप्त करें। या फिर टोल फ्री नंबर 1800-2335-382 पर कॉल करें।
- वैट की अंतिम 2 रिटर्न फाइल करने पर आई.टी.सी. का लाभ।

R.O. No. 62318/2

Credible Chhattisgarh

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७

आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान संपादक – कृष्णकुमार अष्ठाना